तापमान
अधिकतम 35.7 डिग्री
न्यूनतम 28.7 डिग्री

हरिभूमि
सोनीपत भूमि
रोहतक, रविवार, 29 जून 2025

11 राजपुर में निकासी न होने से फिरनी बनी तालाब

12 वेस्ट रामनगर में तार जलने पर फूटा लोगों का गुस्सा

खबर संक्षेप

नाबालिग को अगवा करने का आरोपी काबू

सोनीपत। मोहाना थाना सोनीपत पुलिस ने नाबालिग लड़की को अगवा करने की वारदात में शामिल आरोपित को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित सन्नी निवासी जटवाड़ा का है। पुलिस ने आरोपित को अदालत में पेश किया। जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। पुलिस ने वारदात में शामिल एक आरोपित को पहले गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है। एक व्यक्ति ने गत आठ जून को पुलिस से शिकायत देकर बताया था कि उसकी बेटी संदिग्ध हालत में लापता हो गई। अपने स्तर पर बेटी की तलाश की, लेकिन कोई सुराग हाथ नहीं लग पाया। मामले को लेकर पुलिस को अवगत करवाया। महिला उप निरीक्षक रितु ने बताया कि मामले में कार्यवाही करते हुए मुकदमा दर्ज कर लिया था। पुलिस ने लड़की को बरामद कर उसके अदालत में बयान दर्ज करवाएं। वहीं पुलिस ने मामले में कार्यवाही करते हुए आरोपित हिमांशु को गिरफ्तार कर लिया था। वारदात में शामिल दूसरे आरोपित सन्नी को गिरफ्तार किया है। आरोपित को अदालत में पेश किया। जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

कर्मचारियों को यूपीएस स्वीकार नहीं : ईष्टकान

सोनीपत। हरियाणा सरकार द्वारा केबिनेट की बैठक करके 1 अगस्त से हरियाणा के एनपीएस कर्मचारी व अधिकारियों के लिए यूपीएस (यूनिफाइड पेंशन स्कीम) लागू करने की घोषणा कर दी गई है। अब कर्मचारी एनपीएस छोड़कर यूपीएस में जा सकेंगे जिसके लिए सरकार यूपीएस के लिए ऑप्शन देगी। यूपीएस के इस फैसले पर एनएमओपीएस के आईटी सैल प्रभारी व पेंशन बहाली संघर्ष समिति के प्रदेश मुख्य सलाहकार डॉ प्रमोद ईष्टकान ने कहा कि यदि हरियाणा सरकार कर्मचारी व अधिकारियों को देना ही चाहती है तो यूपीएस के साथ-साथ ओपीएस का भी ऑप्शन दे दे ताकि कर्मचारी अपने विवेक से जिसमें जाना चाहे जा सके। देशभर में एनएम ओपीएस व हरियाणा में पेंशन बहाली संघर्ष समिति के बैनर तले कई सालों से पुरानी पेंशन की मांग कर रहे है। पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल द्वारा मुख्य सचिव की अध्यक्षता में एक कमेटी का भी गठन किया गया था जिसकी केवल एक ही बैठक हुई सरकार द्वारा अगली बैठक का कोई भी समय नहीं रखा गया।

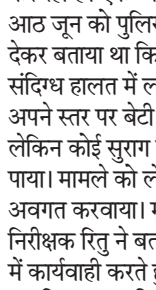

दुष्कर्म मामले में एफआईआर रद करने की एवज में ले रही थी घूस

महिला सब इंस्पेक्टर 60 हजार रिश्वत लेते गिरफ्तार

■ एसआई मंजू पीड़ित से 40 हजार रुपये पहले ले चुकी थी ■ रोहतक एंटी करप्शन ब्यूरो की टीम ने थाने में पैसे लेते पकड़ा

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

शहर के सिविल लाइन थाने में तैनात महिला एसआई को रोहतक एसीबी टीम ने 60 हजार रुपये की रिश्वत सहित रंगे हाथों गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोप है कि एसआई ने शिकायतकर्ता पर दर्ज दुष्कर्म मामले को निरस्त करने की एवेज में एक लाख रुपये की डिमांड की थी। पुलिसकर्मी 40 हजार रुपये की रिश्वत पहले ले चुकी थी। एसीबी टीम ने बाकि 60 हजार रुपये की रिश्वत के साथ रंगे हाथों काबू किया है। आरोपित के खिलाफ कार्यवाही अमल में लाई जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार गांव माहरा निवासी अंकित ने बताया कि उस पर गत 1 जून को रोहतक में दुष्कर्म की जीरो एफआईआर दर्ज हुई थी। सोनीपत के सिविल लाइन क्षेत्र का मामला होने के चलते एफआईआर को सोनीपत ट्रांसफर किया गया था। जिसमें सिविल लाइन थाना की अनुसंधान टीम में नियुक्त मंजू को जांच अधिकारी नियुक्त किया गया था। जांच में मामला संदिग्ध निकला। जिसके बाद मंजू ने एफआईआर रद्द करने की एवज में एक लाख रुपये की मांग की। सौदा तय होने पर अंकित ने 40 हजार रुपये उसे दे भी दिए। इसके बाद वह 60 हजार रुपये और मांग रही थी।

■ माहरा के अंकित ने एसीबी से की थी शिकायत

सोनीपत। आरोपी पुलिसकर्मी को ले जाती एसीबी की टीम।

आरोपी को अदालत में पेश किया जाएगा

मामला कैंसिल करने की एवेज में एक लाख रुपये की डिमांड की गई थी। जिसमें ऐ 40 हजार रुपये की राशि पीड़ित पहले दे चुका था। महिला पुलिस कर्मचारी 60 हजार रुपये की डिमांड और कर रही थी। इस संबंध में जाल बिछाकर उसे रंगे हाथों थाने के अंदर से टीम ने काबू किया है। आरोपित को अदालत में पेश किया जायेगा। टीम कागजी कार्यवाही में जुटी हुई है।
सचिव, प्रभारी एसीबी टीम।

टीम ने रंगे हाथ दबोचा

जिस पर अंकित ने रोहतक की एंटी करप्शन ब्यूरो को मामले की शिकायत की। जिसके बाद इंस्पेक्टर सचिव के नेतृत्व में टीम ने जाल बिछाया। शिकायतकर्ता को रिश्वत के बाकि के 60 हजार रुपये देकर सिविल लाइन थाने भेजा। वहां पर आसपास टीम मौजूद रही। एसआई मंजू ने जैसे ही रुपये लिए टीम ने उसे रुपयों के साथ रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। जानकरी मिली है कि जुआं निवासी नरेश ने रोहतक में शिकायत देकर जीरो एफआईआर करवाई थी। इसके बाद केस ट्रांसफर होकर सोनीपत सिविल लाइन थाना में पहुंचा।

सिविल लाइन थाना पुलिस ने अंकित निवासी माहरा के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था। मामले में एसआई मंजू को जांच अधिकारी बनाया गया था। मामला झूठा मिलने पर उसे कैंसिल करने की प्रक्रिया चल रही थी। मामला कैंसिल होने से पहले ही सब इंस्पेक्टर मंजू अंकित पर दबाव बनाया और उसे कहा कि इस मुकदमे से तेरा नाम निकल जाएगा और एफआईआर कैंसिल हो जाएगी। जबकि मामला जमीनी विवाद का था।

मौसम का बदला मिजाज : आधे शहर में झमाझम बारिश, आधे में बूंदाबांदी

अगले दो दिन बारिश की संभावना, आज के लिए ऑरेंज अलर्ट, तेज हवाएं चलेंगी

बरसात का नजारा...

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

दो दिनों से बढ़ रही गर्मी पर शनिवार दोपहर बाद आई बारिश ने कुछ लगाम लगाई। शनिवार को सुबह से ही आसमान में घने बादल छाए रहे और उमस ने लोगों को बेहाल किया। दिन चढ़ते ही हल्की हवाओं ने कुछ राहत जरूर दी, लेकिन असली सुकून शाम को तब मिला जब शहर के कई हिस्सों में बारिश ने दस्तक दी। बारिश ने भले ही तपिश से राहत दी हो, लेकिन जलभराव और अव्यवस्थित निकासी व्यवस्था ने नगर प्रशासन के दावों की पोल खोल दी है। आने वाले दिनों में और बारिश की चेतावनी के बीच अब देखना होगा कि नगर निगम कितनी तत्परता से हालातों पर काबू पाता है।

कई जगह जलभराव

हालांकि बारिश पूरे शहर में एक समान नहीं रही। शहर का पूर्वी हिस्सा बूंदाबांदी से ही भीग सका, जबकि पश्चिमी इलाके जैसे वेस्ट रामनगर, मंडी क्षेत्र, देवनगर और ककरोई रोड में अच्छी बारिश हुई। बारिश के बाद इन इलाकों में कई जगह जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो गई, जिससे राहगीरों और वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। तेज बारिश के कारण सड़कों पर पानी भर गया और दुकानों व घरों के बाहर कीचड़ फैल गया। सबसे अधिक प्रभावित इलाकों में वेस्ट रामनगर और मंडी क्षेत्र रहे, जहां गली-मोहल्लों में जल निकासी की व्यवस्था चरमरा गई। शनिवार की शुरुआत उमस भरे वातावरण से हुई। अधिकतम तापमान 35.7 डिग्री और न्यूनतम तापमान 28.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दोपहर तक वातावरण भारी और गर्म रहा, लेकिन शाम होते ही बारिश ने मौसम में ठंडक घोल दी।

ऐसा रहेगा मौसम

मौसम विभाग ने आगामी दिनों के लिए भी अलर्ट जारी किया है। जिसमें रविवार को ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। जिसके तहत भारी बारिश और तेज हवाएं चलने की संभावना जताई गई है। वहीं सोमवार व मंगलवार को येलो अलर्ट जारी किया गया है, जिसके तहत जिले में हल्की से मध्यम बारिश का पूर्वानुमान जताया गया है। दूसरी ओर प्रशासन ने निचले इलाकों में रहने वाले लोगों को सतर्क रहने, ड्रेनेज व्यवस्था पर नजर बनाए रखने और अनावश्यक बाहर न निकलने की सलाह दी है। नगर निगम भी जलनिकासी को लेकर सक्रिय नजर आया और जलभराव वाले क्षेत्रों में कर्मचारियों को तैनात किया गया।

जिले में अच्छी बारिश की संभावना

मानसून की बारिश शुरू हो गई है। रविवार को ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। अच्छी बारिश की संभावना है। सोमवार और मंगलवार को भी बारिश संभव है।
डॉ. प्रेमदीप, मौसम विशेषज्ञ, केवीके, सोनीपत

बाइक में पेट्रोल भरवाकर भागने की कोशिश, दो युवक पिस्तौल सहित गिरफ्तार

गोहाना। गिरफ्तार आरोपित के साथ पुलिस टीम।

हरिभूमि न्यूज ⏭ गोहाना

शहर के बाईपास पर स्थित एक पेट्रोल पंप पर शुक्रवार रात उस समय अफरा-तफरी मच गई जब बाइक सवार दो युवकों ने पेट्रोल भरवाने के बाद पैसे दिए बिना सेल्समैन को धक्का देकर फरार होने की कोशिश की।

सेल्समैन की बहादुरी: लेकिन सेल्समैन और उसके सहयोगी की सतर्कता से दोनों युवक मौके पर ही पकड़ लिए गए। तलाशी में एक पिस्तौल और दो कारतूस बरामद होने पर पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया। घटना रात करीब 10:20 बजे जियो पेट्रोल पंप पर हुई। यहां काम करने वाले सचिन निवासी सिकंदरपुर माजरा ने पुलिस को बताया कि दो युवक बाइक पर पेट्रोल भरवाने आए। उन्होंने बाइक की टंकी फुल करने को कहा। जब सचिन ने 800 रुपये मांगे, तो पीछे बैठे युवक ने उसे धक्का दे दिया और बाइक लेकर भागने लगे। सचिन ने तुरंत पीछे बैठे युवक को पकड़ लिया और उसका साथी सूरज भी दौड़कर दूसरे युवक को बाइक समेत पकड़ लाया। दोनों को काबू करने के बाद पुलिस को सूचना दी गई। कुछ ही देर में शहर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों युवकों की तलाशी ली। पूछताछ में आरोपियों की पहचान गांव कथूरा निवासी वीरेंद्र उर्फ मोनू पुत्र आजाद व वीरेंद्र उर्फ बिल्लू पुत्र धर्मबीर के रूप में हुई। तलाशी में वीरेंद्र पुत्र धर्मबीर के पास से एक पिस्तौल, जबकि दूसरे युवक से दो कारतूस बरामद हुए। पुलिस ने दोनों के खिलाफ शस्त्र अधिनियम व अन्य धाराओं के तहत केस दर्ज कर शनिवार को न्यायालय में पेश किया, जहां से उन्हें एक दिन के पुलिस रिमांड पर भेजा गया। पुलिस अब यह जांच कर रही है कि ये युवक हथियार लेकर कहां और किस उद्देश्य से जा रहे थे।

जिला नागरिक अस्पताल में पहुंची रेबीज की 100 वायल

मरीजों को बड़ी राहत

■ अस्पताल प्रबंधन की तरफ से 50 इंजेक्शन रूम में और 10 आपातकालीन कक्ष में करवाई उपलब्ध

■ बीते पांच दिन से इंजेक्शन खत्म होने के कारण मरीजों को प्राइवेट अस्पतालों में भटकना पड़ रहा था

हरिभूमि न्यूज ⏭ सोनीपत

जिला नागरिक अस्पताल में पांच दिन बाद रेबीज की वायल पहुंची। प्रबंधन की तरफ से इंजेक्शन रूम में 100 वायल मुहैया करवाई गई है। वहीं 10 वायल आपातकालीन कक्ष में उपलब्ध करवाई गई है।

दिल्ली नहीं जाना पड़ेगा

ताकि छुट्टी वाले दिन मरीजों को निजी अस्पताल व मेडिकल स्टोर सहित राजधानी दिल्ली व खानपुर न भागना पड़े। प्रबंधन की तरफ से जल्द सुचारू रूप से वायल स्टॉक में रखने का आश्वासन दिया गया है।

100 रुपये में लगता है टीका

बता दें कि नागरिक सोनीपत में चूहा, बिल्ली, कुत्ते, बंदर व अन्य जानवर के काटने जाने पर नागरिक अस्पताल में 100 रुपये प्रति डोज का खर्च लिया जाता है। अस्पताल में हर रोज करीब 60 से ज्यादा नए व करीब 50 के करीब पूराने मरीज अस्पताल में रेबीज की डोल लगवाने के लिए पहुंचते है। अस्पताल में दिन भर में जानवरों के काटने जाने पर आसपास के गांवों के रहने वाले लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। अस्पताल में गत पांच दिनों से रेबीज का इंजेक्शन खत्म था। मरीजों को एंटी रैबीज इंजेक्शन नहीं मिलने से अन्य अस्पतालों का रुख करना पड़ रहा था। जिससे आर्थिक बोझ मरीजों पर बढ़ रहा था। अस्पताल प्रशासन ने दो दिन में इंजेक्शन की आपूर्ति का दावा किया था, उसके बाद पांच दिन बाद प्रबंधन की तरफ से अस्पताल में 100 वायल मंगवाई गई है। जिनमें से 50 वायल इंजेक्शन रूम व 10 वायल आपातकालीन कक्ष में उपलब्ध करवाई गई है।

सोनीपत। मरीज का इंजेक्शन लगाते हुए स्टाफ कर्मचारी।

उच्च अधिकारियों को डिमांड भेजी गई

मरीजों की सुविधा के लिए प्रबंधन की तरफ से हर संभव कदम उठाने काम किया जाता है। रेबीज इंजेक्शन खत्म हो गए थे। जिसके चलते मरीजों को परेशानी उठानी पड़ रही थी। प्रबंधन की तरफ से इंजेक्शन रूम में 50 वायल व 10 वायल आपातकालीन कक्ष में उपलब्ध करवाई गई है। बाकी डिमांड उच्च अधिकारियों को भेजी गई है। उम्मीद है कि जल्द पर्याप्त मात्रा में स्टॉक उपलब्ध हो सकेगा।
-डा. संदीप लठवाल, मीडिया नोडल अधिकारी नागरिक अस्पताल

South Point
GROUP OF INSTITUTIONS, SONIPAT
Run by Mange Ram Educational and Charitable Trust (Regd.)
98120 20033, 98124 21919, 90344 72910
Direct Admission
• B.Tech / LEET (CSE, ECE, Mechanical, Civil)
• M.Tech (CSE, ECE) • M.Tech Part Time (ECE / CSE)
• Diploma / LEET (CSE, ECE, Electrical, Mechanical, Civil, MLT)
• BBA, BCA, MBA, MCA
• B.A. LL.B (Hons.), L.L.B. (Hons.), LLM (Hons.)
• B.A., B.Sc. (Medical/ Non-Medical), B.Com, M.Com, PGD (Yoga)
• M.Sc. (Physics, Chemistry, Maths)
• M.A. (English, Hindi, History, Pol. Science)
• B.Ed., M.Ed., JBT / D.Ed., B.P.Ed.
• D.Pharm, B.Pharm, B. Pharm / Leet
• B.Sc. (Nursing)
• CBSE Affiliated, Sr. Sec. Schools
DILBAG S. KHATRI
Chairman
98120 20033
www.southpoint.net.in

स्मॉलकैप कंपनियां फिर उड़ान भरने को तैयार, दे सकती है अच्छा मुनाफा

● लंबी अवधि के निवेश का लक्ष्य बनाकर लगाएं पैसा ● पिछले माह निफ्टी स्मॉलकैप 100 में 14.7% में तेजी ● अब स्मॉलकैप में निवेश का हो सकता है सही वक्त ● 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

बाजार के परिदृश्य को देखते हुए स्मॉलकैप कंपनियां एक बार फिर उड़ान भरने के लिए तैयार हैं। ये कंपनियां लंबी अवधि में निवेशकों को अच्छा मुनाफा दे सकती हैं। जो लोगों को मालामाल कर देगीं। एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले महीने भारतीय शेयर बाजार में स्मॉलकैप शेयरों ने जबरदस्त तेजी दिखाई, जबकि निफ्टी 50 केवल मामूली बढ़ा। मार्च तिमाही के नतीजों से पता चला कि 74% स्मॉलकैप कंपनियों की ऑपरेशनल एफिशिएंसी बेहतर हुई है। 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से भी स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान मिल रही है, जो लंबी अवधि के निवेशकों के लिए सुनहरा मौका है। पिछला महीना भारत की अर्थव्यवस्था के लिए काफी अच्छा रहा। वैश्विक चुनौतियों और सीमा-पार तनावों के बावजूद मई महीने में भारतीय शेयर बाजारों ने तेज रिकवरी दिखाई। शेयर बाजारों में जहां एक ओर लार्जकैप इंडेक्स सीमित दायरे में घूमते रहे, वहीं असली हलचल स्मॉलकैप शेयरों में दिखी। ये छोटी कंपनियां उन निवेशकों के लिए सुनहरा मौका बन रही हैं, जो लंबी अवधि के लिए पोर्टफोलियो बनाना चाहते हैं।

स्मॉलकैप कंपनियों की विशेषताएं

- **उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न :** स्मॉलकैप कंपनियों में निवेश करने से उच्च रिटर्न मिल सकता है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है क्योंकि इन कंपनियों का भविष्य अनिश्चित हो सकता है।
- **नए और छोटे व्यवसाय :** स्मॉलकैप कंपनियां अक्सर नए और छोटे व्यवसाय होते हैं जो अपने उत्पादों या सेवाओं को बाजार में स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।
- **विकास की गुंजाइश :** स्मॉलकैप कंपनियों में विकास की गुंजाइश अधिक होती है, जिससे निवेशकों को आकर्षित किया जा सकता है।
- **कम तरलता :** स्मॉलकैप कंपनियों के शेयरों में तरलता कम हो सकती है, जिससे निवेशकों को अपने शेयर बेचने में कठिनाई हो सकती है।

स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जिनका मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होता है, आमतौर पर ये नए या छोटे व्यवसाय होते हैं, जिनमें विकास की गुंजाइश अधिक होती है, लेकिन जोखिम भी अधिक होता है। सेबी के अनुसार, स्मॉलकैप कंपनियां वे होती हैं जो मार्केट कैपिटलाइजेशन के मामले में 251वें स्थान से नीचे आती हैं।

बढ़ रहा रिटर्न

मार्च तिमाही के नतीजों के बाद एक अहम ट्रेंड सामने आया- टॉप 250 स्मॉलकैप कंपनियों में से 74% का रिटर्न ऑन कैपिटल एम्प्लॉइड दो अंकों में रहा। इसका मतलब यह है कि ये कंपनियां न केवल मुनाफा कमा रही हैं, बल्कि इनकी ऑपरेशनल एफिशिएंसी भी बेहतर हो रही है। इससे निवेशकों में स्मॉलकैप के प्रति भरोसा पैदा होगा और एक बार फिर निवेशक इन फंडों में निवेश कर अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकेंगे।

स्मॉलकैप में निवेश का बढ़ता मौका

फिलहाल देखा जाए तो वैल्यूएशन की दृष्टि से बाजार में अभी एक अच्छा मौका है। बहुत सारे छोटे कंपनियों के शेयर अपने असली दाम से काफी सस्ते मिल रहे हैं। इसका मतलब है कि आप अच्छे बिजनेस वाले शेयर कम कीमत में खरीद सकते हैं। स्मॉलकैप शेयरों को ज्यादा जोखिम और ज्यादा मुनाफा वाली प्रोफाइल के लिए जाना जाता है, इसलिए इन्हें अक्सर कम रिस्क लेने वाले निवेशकों की पोर्टफोलियो में नजरअंदाज किया जाता रहा है, लेकिन अब इस सोच में बदलाव आ रहा है। जब बाजार में उतार-चढ़ाव कम हो रहा है, तो निवेशकों का रुख भी पॉजिटिव हो रहा है और वे ज्यादा जोखिम उठाने को तैयार हैं। यह बदलाव व्यापक सूचकांकों में भी दिखा है। जहां पिछले महीने निफ्टी 50 ने केवल 2.6% की मामूली बढ़त दर्ज की, वहीं निफ्टी स्मॉलकैप 100 ने प्रभावशाली 14.7% की तेजी दिखाई है।

लंबी अवधि में जबरदस्त मुनाफे के मौका

स्मॉलकैप यानी छोटी कंपनियों के शेयर, लंबे समय में बहुत अच्छा रिटर्न दे सकते हैं। पिछले 7 सालों में इन कंपनियों ने औसतन हर साल करीब 27.6% का मुनाफा दिया है, जो बड़ी कंपनियों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। इन कंपनियों का दायरा भी काफी बड़ा होता है। ये बैंकिंग, हेल्थकेयर, एफएमसीजी और पावर जैसे कई सेक्टरों में ये फैली होती हैं। इसका मतलब है, आपको निवेश के लिए अलग-अलग इंडस्ट्री में मौके मिलते हैं।

'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी से स्मॉलकैप कंपनियों को नई उड़ान

ग्लोबल स्तर पर देखें तो भारत को 'चाइना प्लस वन' स्ट्रेटजी का बड़ा फायदा मिल रहा है। इस स्ट्रेटजी के तहत कई मल्टीनेशनल कंपनियां अपनी मैन्युफैक्चरिंग भारत की तरफ शिफ्ट कर रही हैं। इससे देश में इंडस्ट्रियल ग्रोथ तेज होगी और खासतौर पर स्मॉलकैप मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों को स्केलेबिलिटी और विस्तार का बड़ा मौका मिलेगा। आज के बदलते बाजार में स्मॉलकैप शेयर निवेशकों को एक अलग तरह का एक्सपोजर देते हैं। जहां कम कीमत पर निवेश के साथ कमाई की बड़ी संभावना होती है जो लोग लंबी अवधि के लिए निवेश सोच रहे हैं और थोड़ा रिस्क लेने को तैयार हैं, उनके लिए यह वक्त स्मॉलकैप में निवेश बढ़ाने और पोर्टफोलियो को मजबूत करने का सही मौका है।

ज्यादा रिटर्न के लिए लोग रिस्क लेने को तैयार, एमएफ में बढ़ रहा निवेश का क्रेज

ऑप्शन
बिजनेस डेस्क

- अब कम हो रहा बैंक एफडी का क्रेज, निवेश के नए ऑप्शन ढूंढ़ रहे लोग
- अब लोग बैंक में पैसे जमा करने के बजाय म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार में निवेश कर रहे
- यहां उन्हें ज्यादा फायदा लाभ मिल रहा, एसआईपी के जरिये निवेश ज्यादा पॉपुलर

बढ़ती महंगाई के इस जमाने में लोग निवेश के नए-नए विकल्प खोज रहे हैं। निवेशकों में बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है। यही कारण है कि बैंक एफडी की लोकप्रियता काफी कम हो रही है। भारतीय लोग अब बैंक में पैसे जमा करने के बजाय दूसरी जगहों पर निवेश कर रहे हैं। आजकल लोगों के बीच में म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार जैसी जगह निवेश के लिए ज्यादा पॉपुलर हो रही हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन जगहों पर बैंक से ज्यादा फायदा मिल रहा है। यह जानकारी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के आंकड़ों से पता चली है। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, लोगों की बैंक टर्म डिपॉजिट्स (एफडी, आरडी) में हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2020 के अंत में 50.54% थी। वित्त वर्ष 2025 के अंत में यह घटकर 45.77% हो गई। इसका मतलब है कि लोग अब बैंकों में पहले जितना पैसा जमा नहीं कर रहे हैं। वे निवेश के दूसरे विकल्पों पर ज्यादा भरोसा जता रहे हैं। चूंकि इन विकल्पों में उन्हें एफडी से ज्यादा लाभ मिल रहा है जो महंगाई को मात देने में सक्षम है। अब लोग लंबी अवधी के लिए एसआईपी के जरीये और शेयर बाजार में निवेश को ज्यादा महत्व दे रहे है। महंगाई के दौर को देखते हुए लोग अब ज्यादा रिस्क लेने को भी तैयार हैं, ताकि भविष्य के लिए कम समय में अच्छा पैसा एकत्र कर सकें। इसलिए भी निवेशकों में फिक्स डिपोजिट यानी बैंक एफडी का क्रेज घटता जा रहा है।

ब्याज दरों में हुआ बदलाव

जानकारों का कहना है कि इस दौरान ब्याज दरों में बदलाव हुआ है। रिजर्व बैंक ने कोविड महामारी के दौरान मार्च 2020 से मई 2022 के बीच प्रमुख रेपो दर को 115 बेसिस पॉइंट्स (1.15 प्रतिशत अंक) तक कम कर दिया था। फिर बाद में इसे 225 बेसिस पॉइंट्स तक बढ़ा दिया। हाल ही में, रिजर्व बैंक ने ब्याज दरों को कम करना शुरू कर दिया है। उसने फरवरी में 25 बेसिस पॉइंट्स, अप्रैल में 25 बेसिस पॉइंट्स और इस महीने की शुरुआत में 50 बेसिस पॉइंट्स की कटौती की है। कुल मिलाकर, ब्याज दरें 1 प्रतिशत कम हो गई हैं। इससे भी लोगों में एफडी के प्रति रुझान कम हुआ है और लोगों ने एफडी की बजाय एसआईपी में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई है।

म्यूचुअल फंड में बढ़ी हिस्सेदारी

रिजर्व बैंक के आंकड़ों से पता चलता है कि बचत जमा में व्यक्तियों की हिस्सेदारी पिछले पांच सालों में लगभग 77% पर स्थिर रही है। इसका मतलब है कि लोग अभी भी बचत खाते में पैसा रख रहे हैं। वे म्यूचुअल फंड में भी खूब निवेश कर रहे हैं। अप्रैल तक 23 करोड़ म्यूचुअल फंड अकाउंट्स में से 91% खाते व्यक्तियों के हैं। मई 2021 में यह आंकड़ा 10 करोड़ से थोड़ा ही ज्यादा था। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया के आंकड़ों से यह जानकारी मिली है।

अलग-अलग कर रहे बचत

रिजर्व बैंक के अर्थशास्त्रियों के एक रिसर्च पेपर के अनुसार, भारतीय परिवारों की वित्तीय बचत के पोर्टफोलियो में बदलाव देखा गया है। इसका मतलब है कि लोग अब अपनी बचत को अलग-अलग जगहों पर लगा रहे हैं। बैंकों में जमा की हिस्सेदारी समय के साथ कम हुई है, जबकि इंश्योरेंस और म्यूचुअल फंड में निवेश बढ़ा है। वहीं लोग शेयर बाजार, गोल्ड और सिल्वर में भी निवेश को बढ़ावा देने लगे हैं।

गिरावट का कारण यह भी

एक बड़े बैंक के मुख्य अर्थशास्त्री ने कहा कि जमा में गिरावट का कारण यह है कि लोगों की बचत कम हो रही है और वे शेयर बाजार जैसे अन्य निवेश विकल्पों में ज्यादा पैसा लगा रहे हैं। म्यूचुअल फंड के प्रबंधन के तहत संपत्ति 30 अप्रैल को बढ़कर 69.50 लाख करोड़ रुपये हो गई। वित्त वर्ष 2020 के अंत में यह 22.26 लाख करोड़ रुपये थी। इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में लोगों का निवेश बहुत तेजी से बढ़ा है। एक अन्य बैंक के अर्थशास्त्री ने कहा कि यह बाजार की वजह से है, लेकिन जरूरी नहीं कि जनसांख्यिकी के कारण हो।

रिस्क ले रहे लोग

दिसंबर 2024 में रिजर्व बैंक के एक पेपर में कहा गया था कि बचत करने वालों का तरीका बदल रहा है। साल 2022 में 17.8% भारतीय परिवारों ने जोखिम वाली संपत्तियों में निवेश किया था। वहीं साल 2019 में यह आंकड़ा 15.7% था। जोखिम वाली संपत्तियां मतलब ऐसी जगहें जहां पैसा डूबने का खतरा होता है, जैसे कि शेयर बाजार।

क्या है एफडी में निवेश

एफडी (फिक्स्ड डिपॉजिट) में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप एक निश्चित अवधि के लिए अपने पैसे को बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान में जमा करते हैं और बदले में एक निश्चित ब्याज दर प्राप्त करते हैं।

- निश्चित आयः एफडी में निवेश करने से आपको एक निश्चित आय प्राप्त होती है जो आपके पैसे को बढ़ाने में मदद करती है।
- जोखिम मुक्तः एफडी में निवेश जोखिम मुक्त होता है क्योंकि आपका पैसा बैंक या अन्य वित्तीय संस्थान के पास जमा होता है।
- लिक्विडिटीः एफडी में निवेश करने से आपको अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकालने की सुविधा होती है, हालांकि इसमें कुछ शर्तें और जुर्माना हो सकता है।
- कर लाभः एफडी पर ब्याज आय पर कर लगता है, लेकिन कुछ प्रकार के एफडी जैसे कि टैक्स सेवर एफडी पर कर लाभ मिलता है।

एसआईपी में निवेश के लाभ

- एसआईपी में निवेश एक प्रकार का निवेश है जिसमें आप नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि का निवेश म्यूचुअल फंड में करते हैं।
- नियमित निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको नियमित अंतराल पर निवेश करने की आदत पड़ती है।
- रुपये कॉस्ट एवरेजिंगः एसआईपी में निवेश करने से आपको रुपये कॉस्ट एवरेजिंग का लाभ मिलता है, जिससे आपको बाजार की उतार-चढ़ाव से बचने में मदद मिलती है।
- लंबी अवधि का निवेशः एसआईपी में निवेश करने से आपको लंबी अवधि के लिए निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है।
- विविधीकरणः एसआईपी में निवेश करने से आपको विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंड में निवेश करने का अवसर मिलता है, जिससे आपको अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने में मदद मिलती है।

पांच साल के रिटर्न चार्ट पर स्मॉलकैप फंड सबसे आगे

टॉप 25 में 13 स्कीम ने 33 से 38% सालाना मिला रिटर्न दिया, म्यूचुअल फंड में स्मॉलकैप कैटेगरी हाई रिटर्न का बेहतर विकल्प है, निवेश के लिए लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल का रखना होना जरूरी

रिटर्न
बिजनेस डेस्क

यदि आप भी निवेश कर रहे हैं या करने जा रहे हैं तो म्यूचुअल फंड की स्मॉलकैप कअेगरी आपके लिए निवेश का बढ़िया विकल्प साबित हो सकती है। इसके लिए आपको थोड़ा सयंम के साथ निवेश का लक्ष्य तय करना होगा। इस श्रेणी में अच्छा रिटर्न लेने के लिए आपको निवेश का लक्ष्य कम से कम 5 से 7 साल को लेकर चलना होगा। फाइनेंशियल एडवाइजर्स की यह सलाह रिटर्न चार्ट देखकर बिल्कुल सही साबित होती है। बीते 5 साल या 60 महीनों के दौरान रिटर्न के मामले में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले म्यूचुअल फंड स्कीम पर नजर डालें तो स्मॉलकैप फंड्स ने बाजी मार ली है। 5 साल के टॉप 25 स्कीम में 13 स्कीम स्मॉलकैप फंड कैटेगरी की हैं, जिनमें 33 से 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न मिल रहा है। 5 साल में 38 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह रिटर्न करीब 5 गुना होता है। यानी 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 5 गुना बढ़ा दिया। वहीं, 33 फीसदी एनुअलाइज्ड रिटर्न से कैलकुलेशन करें तो यह करीब 4 गुना रिटर्न होगा। इसका मतलब है कि 33 फीसदी सीएजीआर रिटर्न वाली स्कीम ने 5 साल में निवेशकों का पैसा 4 गुना बढ़ा दिया।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड टॉपर

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ न सिर्फ स्मॉलकैप कैटेगरी का बल्कि ओवरआल भी टॉपर रहा है। इस फंड ने 5 साल में 1 लाख का निवेश 5 लाख रुपये बना दिया। इसके बाद बेहतर प्रदर्शन करने वाली टॉप 5 में शामिल अन्य स्कीम बंधन स्मॉलकैप फंड ने 37.32% एनुअलाइज्ड रिटर्न, बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड ने 36% एनुअलाइज्ड रिटर्न, इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड ने 35.50% एनुअलाइज्ड रिटर्न और एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड ने 35.35% रिटर्न दिया है।

ये हैं 5 साल के टॉप 13 फंड

1. **निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड : 38%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.50% सालाना रहा है. फंड का लेटेस्ट एयूएम 63,007 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.65% है।
2. **बंधन स्मॉलकैप फंड : 37.32%**
ये स्कीम 25 फरवरी 2020 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 35.23% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 11,744 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.39% है।
3. **बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड : 36%**
ये स्कीम 19 दिसंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 28.40% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 1,819 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.53% है।
4. **इडेलवाइस स्मॉलकैप फंड : 35.50%**
ये स्कीम 7 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 27.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 4,580 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.43% है।
5. **एचएसबीसी स्मॉलकैप फंड : 35.35%**
ये स्कीम 12 मई 2014 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 21.12% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 16,061 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.63% है।
6. **टाटा स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 12 नवंबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.31% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 10,529 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.34% है।
7. **इन्वेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड : 35%**
ये स्कीम 30 अक्टूबर 2018 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.74% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 6,823 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.44% है।
8. **केनरा रोबोको स्मॉलकैप फंड : 34.80%**
ये स्कीम 15 फरवरी 2019 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 25.64% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 12,368 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.47% है।
9. **एचडीएफसी स्मॉलकैप फंड : 34.33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 34,032 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
10. **कोटक स्मॉलकैप फंड : 33.55%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 20.26% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 17,329 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.55% है।
11. **आईसीआईसीआई प्रू स्मॉलकैप फंड : 33.17%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 17.84% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 8,254 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.73% है।
12. **सुंदरम स्मॉलकैप फंड : 33%**
ये स्कीम 1 जनवरी 2013 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 18.72% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 3,311 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.86% है।
13. **एलआईसी एमएफ स्मॉलकैप फंड : 32.65%**
ये स्कीम 21 जून 2017 को लॉन्च हुई थी और तब से इसका रिटर्न 16.13% सालाना रहा है। फंड का लेटेस्ट एयूएम 576 करोड़ रुपये है, जबकि एक्सपेंस रेश्यो 0.92% है।

फाइनेंशियल एडवाइजर्स भी बोले, लक्ष्य तय कर लंबी अवधि के लिए निवेश करें, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड 5 साल में 38 फीसदी सीएजीआर रिटर्न के साथ टॉपर

कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न चाहते हैं तो अपनाएं म्यूचुअल फंड्स ट्रेप्स का फंडा

- *ट्रेप्स के जरिये कर सकते हैं अच्छी कमाई, हर निवेशक रखे जानकारी*
- *यह टूल न तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है*
- *यह रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है*
- *एफएफ के लिए बेहतर रिटर्न, सुरक्षित निवेश और शानदार लिक्विडिटी*
- *ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है*

जानकारी
बिजनेस डेस्क

क्या म्यूचुअल फंड्स को कम जोखिम में ज्यादा रिटर्न मिल सकता है? तो इसका जवाब है हां! ट्रेप्स (ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज) नाम के स्मार्ट टूल से म्यूचुअल फंड्स अपनी लिक्विडिटी को मैनेज करते हुए रिटर्न बढ़ाते हैं और पोर्टफोलियो को मजबूत बनाते हैं। ये टूल उन्हें न सिर्फ अपनी तरलता को आसानी से मैनेज करने में मदद करता है, बल्कि रिटर्न भी बढ़ाता है और पोर्टफोलियो को भी मजबूत बनाता है। ट्रेप्स की मदद से म्यूचुअल फंड्स सरकार की सिक्योरिटीज का सहारा लेते हुए शॉर्ट-टर्म में फंड्स खरीदने और बेचने का काम कर सकते हैं। तो चलिए, जानते हैं कि ट्रेप्स कैसे काम करता है और ये क्यों म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार टूल है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे कि यह सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका कैसे काम करता है और आपके निवेश को कैसे बेहतर बना सकता है।

ट्रेप्स यानी 'ट्रेजरी बिल्स रीपरचेज' एक शॉर्ट-टर्म इन्वेस्टमेंट का तरीका है, जो निवेशकों को इस्तेमाल ना होने वाले पैसों से रिटर्न कमाना में मदद करता है। इसे खासतौर पर बैंक, फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन और म्यूचुअल फंड्स इस्तेमाल करते हैं, ताकि वो अपनी कमाई को बढ़ा सकें। ट्रेप्स में एक पार्टी ट्रेजरी बिल्स को दूसरी पार्टी को बेचती है और फिर एक तय तारीख और कीमत पर इन्हें वापस खरीदने का समझौता करती है. ये लेन-देन सरकार की सिक्योरिटी से सुरक्षित होता है, इसलिए इसमें जोखिम कम होता है। मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड के पास ज्यादा पैसा पड़ा है और वो उसे ऐसा निवेश करना चाहता है, जिसमें लिक्विडिटी बनी रहे। तब वो उस पैसे को ट्रेप्स के जरिए निवेश कर सकता है। इस तरीके से म्यूचुअल फंड को बिना पैसा जमा किए ही ब्याज मिल जाता है और उसकी लिक्विडिटी भी बनी रहती है।

म्यूचुअल फंड्स में कैसे काम करता है ट्रेप्स

मान लीजिए, किसी म्यूचुअल फंड को अचानक बड़े अमाउंट की जरूरत पड़ गई, जैसे कि कस्टमर्स के द्वारा पैसे निकालने के कारण। ऐसे में वह ट्रेप्स का इस्तेमाल कर सकता है। इससे उसे अपनी लंबी अवधि के इन्वेस्टमेंट्स को नुकसान में बेचने की जरूरत नहीं होती। ट्रेप्स सरकारी सिक्योरिटीज पर बेस्ड होते हैं, इसलिए ये काफी सुरक्षित माने जाते हैं। ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक शानदार तरीका है, जो उन्हें सेफ्टी, लिक्विडिटी और बेहतर रिटर्न्स का अच्छा संतुलन देता है।

ट्रेप्स के प्रमुख फायदे

- निवेशकों के लिए ज्यादा रिटर्न्स : जब बाजार में ब्याज दरें बढ़ी होती हैं, तो ट्रेप्स के जरिए म्यूचुअल फंड्स अपनी खाली पड़ी नकदी से अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। इसमें वह उस फंड का इस्तेमाल करते हैं, जिसे वह उस समय शेयर मार्केट में निवेश नहीं करना चाहते हैं।
- नियमों का पालन : सेबी ने यह नियम बनाया है कि म्यूचुअल फंड्स को अपनी लिक्विड एसेट का एक हिस्सा ट्रेप्स में निवेश करना होगा। इससे निवेशकों को यह भरोसा मिलता है कि उनके पैसे सुरक्षित हैं और सभी नियमों का पालन हो रहा है।
- फास्ट लिक्विडिटी : ट्रेप्स की सबसे अच्छी बात यह है कि म्यूचुअल फंड्स को जल्दी से पैसा मिल जाता है। जब किसी को पैसे की जरूरत होती है, तो ट्रेप्स से वे जल्दी नकदी ले सकते हैं।
- डायवर्सिफिकेशन : म्यूचुअल फंड्स के पोर्टफोलियो को अलग-अलग प्रकार के निवेशों में बांटना जरूरी है, ताकि जोखिम कम हो। ट्रेप्स इस डायवर्सिफिकेशन में मदद करता है और म्यूचुअल फंड्स को बाजार की उतार-चढ़ाव से बचाता है।
- ट्रेप्स म्यूचुअल फंड्स के लिए एक बेहतरीन तरीका है, जो उन्हें ज्यादा रिटर्न्स, सुरक्षित पोर्टफोलियो और पैसे की सुरक्षा देता है।

ट्रेप्स की विशेषताएं

- अल्पकालिक निवेश : ट्रेप्स अल्पकालिक निवेश विकल्प है जिसमें निवेश की अवधि आमतौर पर कुछ दिनों से लेकर कुछ महीनों तक होती है।
- सरकारी समर्थन : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको सरकारी समर्थन मिलता है, जो इसे एक सुरक्षित निवेश विकल्प बनाता है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है, जिससे आप अपने पैसे को आवश्यकता पड़ने पर निकाल सकते हैं।

ट्रेप्स के लाभ

- सुरक्षित निवेश : ट्रेप्स एक सुरक्षित निवेश विकल्प है क्योंकि इसमें सरकारी समर्थन होता है।
- निश्चित आय : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको निश्चित आय प्राप्त होती है।
- लिक्विडिटी : ट्रेप्स में निवेश करने से आपको उच्च लिक्विडिटी मिलती है।

खबर संक्षेप

एससी-ओबीसी समुदाय पर अत्याचार चिंताजनक

सोनीपत। देश के अलग-अलग हिस्सों में अनुसूचित जाति (एससी) और अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) समुदायों के लोगों पर हो रहे अत्याचारों को लेकर महिला कांग्रेस की प्रदेश महासचिव एडवोकेट आशा अहलावत ने गंभीर चिंता जताई है। उन्होंने उत्तर प्रदेश और ओडिशा में हाल ही में घटित दो घटनाओं का उदाहरण देते हुए केंद्र और संबंधित राज्य सरकारों से सवाल किया है कि आखिर कब थमेगा जातीय हिंसा का यह दौर? महिला कांग्रेस की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि भाजपा शासित उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में यादव समाज के एक युवक के साथ अमानवीय व्यवहार किया गया। युवक जब एक घर में कथा वाचन के लिए गया तो एक ब्राह्मण व्यक्ति ने जातिगत घृणा के चलते उसकी पिटाई की, सिर मुंडवाया और महिला का मूत्र छिड़क दिया।

कल से 2 जुलाई तक लगेगा कैंप

सोनीपत। नगर निगम क्षेत्र की संपत्तियों के रिकॉर्ड को सटीक और अद्यतन बनाए रखने के लिए नगर निगम सोनीपत विशेष कैंप लगाने जा रहा है। निगम के महापौर एवं आयुक्त के निर्देशानुसार, 30 जून से 2 जुलाई 2025 तक सुबह 9 से 11 बजे तक निगम कार्यालय में विशेष कैंप का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान आईडी में त्रुटियों को ठीक करवाने के लिए दस्तावेजों के आधार पर समाधान किया जाएगा। नगर निगम ने नागरिकों से अपील की है कि वे अपनी प्रॉपर्टी का सेल्फ सर्टिफिकेशन करें ताकि उन्हें भविष्य में कई प्रकार के लाभ मिल सकें। यह कार्य हरियाणा सरकार की वेबसाइट पर किया जा सकता है। नगर निगम ने जानकारी दी है।

कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा आज शहर में

झज्जर। लोक निर्माण (भवन एवं सड़क) तथा जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा रविवार को झज्जर दौरे पर रहेंगे। इस संबंध में जानकारी देते हुए उनके निजी सचिव अरुण कुमार ने बताया कि कैबिनेट मंत्री सांय चार बजे शहर के पीडब्ल्यूडी विश्राम गृह पहुंचेंगे, जहां वह गुरु दक्ष प्रजापति समाज की सार्वजनिक बैठक को संबोधित करेंगे। इसके उपरांत विश्राम गृह में ही सांय साढ़े चार बजे कैबिनेट मंत्री प्रेस कॉन्फ्रेंस को भी संबोधित करेंगे।

सुबह धूप और दोपहर बाद छा गए बादल

बहादुरगढ़। शनिवार की सुबह इलाके में तेज धूप निकली लेकिन दोपहर होते होते मौसम बदल गया। दोपहर बाद आसमान में बादल छाए गए। कुछ मिनट के लिए बूंदाबादी भी हुई, लेकिन तेज बरसात नहीं हो सकी। शाम तक आसमान में बादल छाए हुए थे। बरसात की संभावना बनी हुई थी।

किसान चौक के निकट व्यक्ति का शव मिला

बहादुरगढ़। जाखोदा बाईपास पर किसान चौक के निकट सड़क पर एक व्यक्ति का शव मिला। मौत का कारण स्पष्ट नहीं है और मृतक की पहचान भी नहीं हो सकी है। पुलिस ने शव को नागरिक अस्पताल में रखवा दिया है। घटना शुक्रवार शाम की है। दरअसल, जाखोदा बाईपास पर सड़क किनारे एक व्यक्ति मृत अवस्था में था। किसी की नजर पड़ी तो पुलिस को सूचना दी गई।

सोनीपत। कैंप में हिस्सा लेती जीवीएम गर्ल्स की छात्राएं। फोटो :हरिभूमि

राज्य स्तरीय यूथ रैडक्रॉस एडवेंचर कैंप में जीवीएम कन्या महाविद्यालय की टीम प्रथम

शिविर में चौंतीस कॉलेज की एक सौ छियासी प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

हिमाचल प्रदेश में संपन्न राज्य स्तरीय यूथ रैडक्रॉस एडवेंचर कैंप में जीवीएम गर्ल्स कालेज की टीम अव्वल रही। कैंप में चौंतीस कालेजों की एक सौ छियासी प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें जीवीएम की टीम ने ओवरऑल टीम ट्रॉफी जीती। संस्था के प्रधान डा. ओपी परूथी व प्राचार्या डा. मंजुला स्पाह ने विजेताओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। जीवीएम की यूथ रैडक्रॉस इकाई की काउंसलर डा. पूजा गुलाटी ने बताया कि इंडियन रैडक्रॉस सोसायटी की हरियाणा राज्य शाखा के तत्वावधान में मनाली हिमाचल प्रदेश में १७ से २१ जून तक विशेष रूप से छात्राओं के लिए राज्य स्तरीय यूथ रैडक्रॉस एडवेंचर कैंप का आयोजन किया गया। कैंप में डा. पूजा के नेतृत्व में वाईआरसी की तीन छात्राओं ने हिस्सा लिया, जिनमें बीकॉम द्वितीय वर्ष की डॉली, इशिका और स्नेहा शामिल रही।

भ्रमण करवाया

इनके सहयोग के लिए वाईआरसी की सहायक काउंसलर कविता सैनी भी शिविर में शामिल हुई। प्रतिभागी छात्राओं को अंजनि महादेव मंदिर, रोहतांग दर्रा, अटल टनल, गायत्री मंदिर तथा मॉल रोड का भी भ्रमण करवाया गया।

ग्रामीणों ने की एसडीएम से पानी निकासी के समाधान की मांग

गांव राजपुर में दूषित पानी की निकासी ना होने से फिरनी बनी तालाब, जताया विरोध

पानी निकासी की व्यवस्था न होने से मुख्य सड़क पर जलभराव

गांव में पानी की निकासी की समुचित व्यवस्था नहीं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

गांव राजपुर में भिगान गांव की तरफ से आने के बाद गांव में प्रवेश करने के लिए पानी निकासी की व्यवस्था न होने के कारण मुख्य सड़क पर जल भराव के कारण लोग परेशान है। ग्रामीणों ने गांव के गंदे पानी की निकासी के समाधान की एसडीएम से मांग की है। राहगीर सुरेश, सतबीर, विकास, महेन्द्र ने बताया कि गांव राजलू गढ़ी से वाया राजपुर होकर भिगान जी टी रोड पर जाते है तो गांव राजपुर में जलभराव के कारण आवागमन में बेहद परेशानी होती है। उन्होंने बताया कि गांव के गंदे पानी की निकासी की समुचित व्यवस्था न होने के कारण नालियों का गंदा पानी पूरा फिरनी पर भरा हुआ है। जिससे निकलने में ऐसा लगता कि जैसे किसी तालाब के पानी से निकल रहे है। उन्होंने बताया कि अज्ञात व्यक्ति तो अपने वाहन को उसके अन्दर से निकालने में डरता है कि फिरनी भर भरे पानी में कही कोई गहरा गड्ढा न हो। उन्होंने बताया कि पानी निकासी न होने के कारण उसके पास की गलियों में भी पानी का जमाव है। इस बारे में जब ग्राम सचिव से सर्म्पक किया तो उन्होंने बताया कि उनके पास अभी गांव का जार्च मिला है। इस बारे में पूरी जानकारी नही है।

गन्नौर। दूषित पानी की निकासी न होने से गांव की फिरनी पर भरा पानी, जो परेशानी का सबब बना हुआ। फोटो :हरिभूमि

गन्नौर। सड़क टूटने के कारण बने गड्ढे। फोटो :हरिभूमि

सड़क टूटने से रोष

गन्नौर। भिगान जी टी रोड से राजपुर गांव की तरफ आने वाली सड़क टूटने के कारण गड्ढे हो गए। सड़क टूटने के कारण बिखरी रोड़ी से दुपहिया वाहन चालक स्लिप होकर कई बार चोटिल हो चुके है। वाहन चालकों का आरोप कि इस तरफ सड़क एवं भवन निर्माण विभाग कोई ध्यान नही दे रहा है। जिससे वाहन चालकों में रोष है। वाहन चालक सुरेन्द्र, मीनू, नरेश, सुमित ने बताया कि सड़क निर्माण के कुछ समय बाद ही टूटनी शुरू हो गई थी। उस समय विभाग द्वारा जगह-जगह पैच लगवा दिए थे। उसके बाद दोबारा से सड़क टूटने लगी है। ग्रामीणों ने संबधित विभाग से गड्ढों को भरवाने की मांग की है। निर्माण एंजेसी की जिम्मेदारी, करवाए जाएगे ठीक एसडीओ: सड़क एवं भवन निर्माण विभाग के एसडीओ अनिल चहल ने बताया कि सड़क टूट गई है तो निर्माण के तीन साल तक निर्माण एजेंसी की ठीक करने की जिम्मेदारी है। सड़क को निर्माण एंजेसी को आदेश देकर शीघ्र ठीक करवाया जाएगा।

नवनिर्मित शेड का उद्घाटन करते विधायक देवेन्द्र साथ में गोशाला के पदाधिकारी।

गाय हमारी संस्कृति-धर्म का अहम हिस्सा : देवेन्द्र

विधायक ने शेड का उद्घाटन किया

- सांदल कलां गोशाला में 17 लाख रुपये की लागत से बना शेड
- गोशाला परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम हुआ, 150 पौधे लगाए

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

विधायक देवेंद्र कादियान ने शनिवार को सांदल कलां गांव की श्री राधाकृष्ण गोपाल आदर्श गोशाला में नवनिर्मित 2 शेड का उद्घाटन किया। इस शेड का निर्माण करीब 17 लाख रुपये की लागत से हुआ है। उन्होंने फीता काटकर शेड की शुरुआत की। इसके बाद गौ पूजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता गऊशाला प्रधान सतपाल सिंह ने की। गोशाला में शेड निर्माण एक कंपनी ने दान किया है। कार्यक्रम में पहुंचने पर विधायक का गोशाला कमेटी और ग्रामीणों ने फूलमालाओं से स्वागत किया। इस दौरान कमेटी ने अपनी मांगें विधायक के सामने रखीं। विधायक ने उन्हें पूरा करने का आश्वासन दिया। गोशाला परिसर में पौधरोपण कार्यक्रम भी हुआ। इसमें करीब 150 पौधे लगाए गए। शुरुआत विधायक कादियान ने खुद पौधा लगाकर की। उन्होंने कहा कि पेड़-पौधे खुशहाल जीवन का आधार हैं। हर व्यक्ति को एक पौधा लगाकर उसकी देखभाल करनी चाहिए। कार्यक्रम में पहुंचने पर विधायक का गोशाला कमेटी और ग्रामीणों ने फूलमालाओं से स्वागत किया। दौरान कमेटी ने अपनी मांगें विधायक के सामने रखीं। विधायक ने उन्हें पूरा करने का आश्वासन दिया। विधायक ने कहा कि गर्मी में शेड बनने से गायों को राहत मिलेगी। सभी को गौ सेवा में भाग लेना चाहिए। गाय हमारी संस्कृति और धर्म का अहम हिस्सा है।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर सुनील शर्मा, मनीष ट्री, मामन सिंह, सुनील सरपंच, पूर्व सरपंच राकेश, शिव कुमार, हेमचंद्र, अनिल ठेकेदार, कर्म सिंह, कंवर सिंह, बलबीर सिंह सहित कई लोग मौजूद रहे।

संगठन का पूरी ईमानदारी के साथ होगा गठन : गायकवाड़

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

जिला कांग्रेस कमेटी सोनीपत द्वारा कांग्रेस भवन में संगठन सृजन अभियान के अन्तर्गत जिलास्तरीय पार्टी विभागों एवं सामाजिक संगठनों की बैठक का आयोजन महाराष्ट्र सांसद एवं केन्द्रीय प्रयवेक्षक वर्षा गायकवाड़ के नेतृत्व एवं प्रदेश प्रयवेक्षक सरदार बलजिन्दर सिंह ठरवी, मनिषा सांगवान के सहयोग से किया गया। इस अवसर पर सभा को सम्बोधित करते हुए सांसद गायकवाड़ ने कहा कि इस बार राहुल गांधी की अगुवाई मे पूरे देश में बिना किसी गुटबाजी और भेदभाव के पूरी ईमानदारी से संगठन का सृजन किया जा रहा है। इस बार सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए उनको उनकी पूरी पूरी भागेदारी संगठन में दी जाएगी। इस बार ना कोई सिफारिश ना कोई अन्य कारक संगठन सृजन मे काम कर पाएगा। पार्टी सिर्फ ईमानदार और कर्मठ कार्यकर्ताओं को ही ताकत देने का काम करने जा रही है। इस अवसर पर प्रदेश प्रवक्ता राकेश सौदा, कार्यालय प्रभारी प्रेमनारायण गुप्ता, विधायक इन्दूराज नरवाल, पूर्व विधायक सुरेन्द्र पंवार, जगबीर मलिक, सुखबीर फरमाणा, पदम सिंह दहिया, जय भगवान आन्तिल एवं दयानन्द वाल्मीकि आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

सोनीपत। बैठक के दौरान मौजूद पर्यवेक्षक, विधाक, पूर्व विधायक एवं अन्य।

बिजली बिल बढ़ोतरी के खिलाफ पंचकूला में विरोध प्रदर्शन करने का किया ऐलान

- इनेलो ने घोषित की खरखौदा विधानसभा क्षेत्र की कार्यकारिणी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| खरखौदा

इनेलो कार्यकर्ताओं की बैठक स्थानीय पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस में हुई। जिसमें खरखौदा विधानसभा क्षेत्र की कार्यकारिणी घोषित की गई। जिसमें कुल 19 पदाधिकारियों को शामिल किया गया है। नवगठित कार्यकारिणी में अध्यक्ष के अलावा एक वरिष्ठ उपाध्यक्ष, सात उपाध्यक्ष, एक प्रधान महासचिव, चार महासचिव, इतने ही सचिव और एक मीडिया प्रभारी को शामिल किया गया है। बलवान नंबरदार को अध्यक्ष, रोहतास गहलावत को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, राजबीर, अनिल, नरेंद्र, अशोक, रामनिवास, सत्यनारायण, जय सिंह को उपाध्यक्ष, डॉ. महेंद्र को प्रधान महासचिव, राजेंद्र, समुंदर गहलावत, कर्मबीर, अत्तर सिंह को महासचिव, मांगेराम, विक्की, वीरेंद्र, वेदपाल को सचिव तथा नितिन तनेजा को मीडिया प्रभारी बनाया गया है। इनके अलावा कृष्णा दहिया को महिला हलका अध्यक्ष और विकेश ठेकेदार को किसान सेल का हलका अध्यक्ष बनाया गया है। चुने गए पदाधिकारियों का फूल माला व पटका पहनाकर स्वागत किया गया। जिला अध्यक्ष कुणाल गहलावत ने कहा कि पार्टी के संगठन को मजबूत करने के लिए हर स्तर पर नई कार्यकारिणी का गठन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार ने बिजली बिलों में बढ़ोतरी करके जनता की कमर तोड़ने का काम किया गया है। जिसके विरोध में 1 जुलाई को प्रदेश स्तर पर विद्युत भवन पंचकूला में विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। इनेलो के लोकसभा के पूर्व प्रत्याशी एवं पूर्व पुलिस अधीक्षक अनूप सिंह दहिया ने कहा कि प्रदेश में आपराधिक ग्राफ बढ़ता जा रहा है। जिससे प्रदेश की जनता अपने को असुरक्षित महसूस कर रही है। इस मौके पर पूर्व जिला अध्यक्ष कृष्ण मालिक, महिला जिला अध्यक्ष मंजीत फोगाट, रवीन्द्र मंडौरा, महावीर शर्मा, जोरावर, प्रमोद उर्फ मोदी, होशियार सिंह किढौली आदि उपस्थित रहे।

खरखौदा। नवनियुक्त पदाधिकारियों का स्वागत करते वरिष्ठ नेता

खुशनुमा कक्षा माहौल बनाए रखने के लिए विभिन्न पहलुओं पर चर्चा

- दो दिवसीय शिक्षक कार्यशाला का किया आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

हैप्पी चाइल्ड वमावि, महलाना रोड, सोनीपत में दो दिवसीय शिक्षक कार्यशाला का आयोजन किया गया। शुक्रवार को किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम विषय पर आधारित कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसकी मुख्य वक्ता रीना मलिक तथा समीक्षा रहीं। इस कार्यशाला में उन्होंने किशोरावस्था से संबंधित विविध आवश्यक पहलुओं पर चर्चा की गई।शनिवार को दूसरे दिन कार्यशाला का विषय खुशहाल कक्षा रहा जिसकी मुख्य वक्ता सीमा और पारुल पाहुजा रहीं। इसके अंतर्गत उन्होंने कक्षा में विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए खुशनुमा कक्षा माहौल बनाए रखने के लिए विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की जिसके अंतर्गत प्रशिक्षकों ने अनेक रोचक गतिविधियों के द्वारा कार्यशाला को और भी ग्रहण ग्राही बनाया। विद्यालय के अध्यक्ष नरेंद्र बाल्यान ने प्रशिक्षकों व शिक्षकों की बेहतर पठन व शिक्षण प्रक्रिया के प्रति जिज्ञासा व सक्रिय भागीदारी की प्रशंसा की।

सोनीपत। कार्यशाला में शामिल प्रतिभागी एवं वक्तागण।

कल्पना चावला विद्यापीठ में विशेष प्रशिक्षण सत्र का आयोजन

जीवन कौशल सफलता पाने में मददगार: रेनू

हरिभूमि न्यूज ▶▶| खरखौदा

खांडा रोड़ स्थित कल्पना चावला विद्यापीठ में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) द्वारा एक विशेष प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण सत्र का आयोजन रेनू श्रीन द्वारा किया गया, जो इंडियन मॉडर्न स्कूल, सोनीपत की उप प्रधानाचार्या हैं। उन्हें सीबीएसई से ट्रेनर का प्रमाण पत्र हासिल है। प्रशिक्षण सत्र का मुख्य विषय लाइफ स्किल्स को विकसित करना था। इस 6 घंटे की डोमेन वन में शिक्षकों को विभिन्न जीवन कौशलों के बारे में जानकारी दी गई। प्रशिक्षण सत्र के दौरान शिक्षकों ने सक्रिय भागीदारी की और अपने कौशलों में सुधार करने के लिए प्रेरित हुए। उन्होंने बताया कि लाइफ स्किल्स यानी जीवन कौशल वे क्षमताएं और कौशल हैं जो हमें अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने और चुनौतियों का सामना करने में मदद करते हैं। ये कौशल हमें समस्याओं का समाधान करने, सही निर्णय लेने, प्रभावी ढंग से संवाद करने, समय का सदुपयोग करने, आत्मविश्वास बढ़ाने और तनाव को नियंत्रित करने में सहायक होते हैं। लाइफ स्किल्स को विकसित करने से हम अपने व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं। लाइफ स्किल ट्रेनिंग के माध्यम से अध्यापक बच्चों को विभिन्न जीवन कौशलों के महत्व को समझने में मदद कर सकते हैं। अध्यापक बच्चों को समस्या समाधान, निर्णय लेना, संचार कौशल और आत्मविश्वास बढ़ाने जैसे विषयों पर प्रशिक्षित कर सकते हैं। इससे बच्चे अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने और चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकते हैं। अध्यापक बच्चों को वास्तविक जीवन की स्थितियों में इन कौशलों का प्रयोग करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। प्राचार्या उषा वत्स और प्राथमिक प्रभारी रितु ने रेनू श्रीन को स्मृति चिह्न और उपहार देकर सम्मानित किया।

खरखौदा। जीवन कौशलों की जानकारी देते ट्रेनर रेनू श्रीन।

खबर संक्षेप

सोनीपत। भंडारें के दौरान प्रसाद ग्रहण करते हुए श्रद्धालुगण। फोटो: हरिभूमि

दादा मोहनदास धाम में भंडारा और संकीर्तन

सोनीपत। दादा मोहनदास धाम लहराड़ा में भंडारा एवं संकीर्तन का आयोजन किया गया। जिसके तहत सुबह 11 बजे संकीर्तन व भंडारा लगाया गया। महंत तपस्वी योगी बाबा विजयनाथ की अध्यक्षता में कार्यक्रम संपूर्ण हुआ। शंभूनाथ की देखरेख में सभी भक्तों सेवकों ने प्रसाद ग्रहण किया। भोले बाबा आश्रम प्रमुख एवं दादा के उपासक सेवक सुनील बैरागी उर्फ भोले बाबा ने बताया कि कार्यक्रम में पूनम हुड्डा, रितू, जगमती ने संकीर्तन किया। इस मौके पर उमेश, भगवानदास, प्रवीण, दीपक, मुकेश आदि मौजूद रहे।

सोनीपत। बच्चों के बीच खाने का सामान वितरित करती एनसीसी कैडेट्स।

एनसीसी कैडेट्स की सामाजिक गतिविधियां जारी

सोनीपत। हिन्दू गर्ल्स कॉलेज, सोनीपत की एनसीसी यूनिट की कैडेट्स ने महिलाएं: सामाजिक संकेतकों का सुधार विषय पर आधारित सामाजिक सेवा एवं सामुदायिक विकास कार्यक्रमों को अपने-अपने क्षेत्रों में क्रियान्वित किया। पिछले एक सप्ताह से 30 एनसीसी कैडेट्स ने पोस्टर और चार्ट बनाकर महिलाओं से संबंधित स्वास्थ्य, शिक्षा, अधिकारों, और आत्मनिर्भरता जैसे विषयों पर जागरूकता फैलाई। यह संपूर्ण अभियान 12 हरियाणा बटालियन एनसीसी, सोनीपत के कमांडिंग ऑफिसर के मार्गदर्शन और कॉलेज की एसोसिएट एनसीसी अधिकारी कैप्टन नीतू नसीयर के नेतृत्व में आयोजित किया गया।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की दी जानकारी

गन्नौर। बाल भवन इंटरनेशनल स्कूल में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में जीडी गोयनका स्कूल की उप प्राचार्या निधि जैन ने अपने 22 वर्षों के सीबीएसई अनुभव के साथ शिक्षकों को नई शिक्षा नीति के महत्व और इसके प्रभावी क्रियान्वयन के बारे में जानकारी दी। बाल भवन इंटरनेशनल स्कूल के प्राचार्य जय भारत गुप्ता ने निधि जैन को एक पौधा व उपहार भेंट किया। उन्होंने निधि जैन द्वारा अपना अनुभव सांझा किए गए।

वेस्ट रामनगर में बिजली के तार जलने पर फूटा लोगों का गुस्सा, रोड कब्जाया

सुबह 11 बजे बहाल हुई आपूर्ति, बिजली-पानी की किल्लत से लोग बेहाल

सूरी पेट्रोल पंप वाली गली में लगा वाहनों का जाम, कनिष्ठ अभियंता ने मौके पर पहुंचकर दिया आश्वासन

हरिभूमि न्यूज ⏭सोनीपत

सोनीपत। वेस्ट रामनगर में जाम लगाए लोग। फोटो: हरिभूमि

वेस्ट रामनगर क्षेत्र में शनिवार को बिजली की गंभीर समस्या को लेकर लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। शनिवार तड़के बिजली के तार जल जाने के कारण बिजली आपूर्ति पूरी तरह ठप हो गई, जिससे आक्रोशित होकर स्थानीय लोगों ने सुबह सूरी पेट्रोल पंप वाली गली में सड़क जाम कर दिया। इस दौरान मार्ग के दोनों ओर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं, जिससे राहगीरों और वाहन चालकों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। स्थानीय लोगों ने बताया कि शुक्रवार रात बिजली लाइन में फॉल्ट आने से तार टूट गया, जिससे वेस्ट रामनगर और मंडी क्षेत्र में बिजली आपूर्ति बाधित रही। शनिवार सुबह तक बिजली नहीं आने के कारण लोग गर्मी और पानी की किल्लत से परेशान हो गए। क्षेत्रवासियों का कहना है कि बिजली की लगातार कटौती से घरेलू कामकाज प्रभावित हो रहा है और गर्मी के कारण बीमार बुजुर्गों और छोटे बच्चों की हालत बिगड़ रही है।

लोगों ने बताया कि बिजली संकट की वजह से पहले ही पानी की सप्लाई कम हो रही है। कई घरों में टंकी भरने तक के लिए बिजली उपलब्ध नहीं होती, जिसके कारण लोगों को मजबूरन पानी के टैंकर मंगवाने पड़ रहे हैं। जाम की सूचना मिलने पर बिजली निगम के कनिष्ठ अभियंता अंग्रेज सिंह मौके पर पहुंचे और लोगों को जल्द समस्या का समाधान कराने का भरोसा दिलाया। उनके आश्वासन पर लोगों ने करीब 15 मिनट बाद जाम खोल दिया, जिससे यातायात सुचारु हो सका। बिजली आपूर्ति दोपहर 11 बजे के बाद बहाल हुई, तब जाकर लोगों ने राहत की सांस ली।

अधिकारियों को दी गई शिकायतें बेअसर

स्थानीय निवासी लंबे समय से बिजली निगम के अधिकारियों से शिकायत कर रहे हैं, लेकिन अब तक स्थायी समाधान नहीं हुआ है। क्षेत्र में रोजाना कई घंटे अघोषित बिजली कटौती होती है, जिससे लोग बेहद परेशान हैं। क्षेत्रवासियों ने चेतावनी दी कि यदि जल्द ही क्षेत्र की बिजली समस्या का स्थायी समाधान नहीं किया गया तो वे फिर से आंदोलन के लिए मजबूर होंगे। उन्होंने कहा कि ट्रांसफार्मर की क्षमता बढ़ाई जाए और जर्जर तारों को बदला जाए ताकि बार-बार फॉल्ट की स्थिति न बने। स्थानीय नागरिकों ने प्रशासन से आग्रह किया है कि वे इस बार महज आश्वासन तक सीमित न रहें, बल्कि जमीनी कार्रवाई करें ताकि आमजन को इस भीषण गर्मी में राहत मिल सके। यदि ऐसा नहीं हुआ, तो आगे और बड़ा विरोध किया जाएगा।

सोनीपत। बिजलीघर के बाहर धरना देते हुए क्षेत्रवासी। फोटो: हरिभूमि

मयूर विहार में वोल्टेज समस्या को लेकर लोगों दिया धरना

पांच दिन में समाधान न होने पर दी चेतावनी

हरिभूमि न्यूज ⏭सोनीपत

मयूर विहार कॉलोनी में बिजली की बदहाल व्यवस्था को लेकर लोगों का आक्रोश शनिवार को सड़कों पर नजर आया। लगातार कम वोल्टेज और बिजली के तारों के बार-बार जलने की समस्या से जूझ रहे क्षेत्रवासियों ने गढ़ी ब्राह्मणान स्थित बिजलीघर के बाहर जोरदार धरना प्रदर्शन किया और बिजली निगम के खिलाफ नारेबाजी की। धरने में जिला पार्षद संजय बड़वासनिया, जोगिंद्र मलिक, सतीश, टिंकू, प्रदीप और संदीप समेत बड़ी संख्या में स्थानीय निवासी शामिल हुए। प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि वोल्टेज की समस्या पिछले कई महीनों से बनी हुई है, जिसके कारण घरों में लगे उपकरण खराब हो रहे हैं और लोगों को रोजाना परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। प्रदर्शनकारियों ने बताया कि वोल्टेज की समस्या के कारण कई बार बिजली के तार जल चुके हैं, जिससे घंटों बिजली आपूर्ति ठप रहती है। बिजली निगम के अधिकारियों को बार-बार शिकायत देने के बावजूद कोई स्थायी समाधान नहीं किया गया। नया ट्रांसफार्मर लगाने का आश्वासन पहले भी दिया गया था।

अब केवल आश्वासन नहीं, ठोस कार्रवाई चाहिए

स्थानीय नागरिक राजेश, कुलदीप, सुरेश, नरेंद्र, महावीर और रविंद्र ने कहा कि अब जनता झूठे आश्वासनों से संतुष्ट नहीं होगी। यदि प्रशासन ने इस बार भी कार्यवाही नहीं की, तो बड़ा जन आंदोलन खड़ा किया जाएगा। प्रदर्शनकारियों की मांग है कि क्षेत्र में अत्यधिक लोड झेल सकने वाले ट्रांसफार्मर लगाए जाएं, जर्जर तारों को बदला जाए और तकनीकी खराबियों को समय रहते दुरुस्त किया जाए, ताकि बार-बार बिजली बंद होने जैसी स्थिति से निजात मिल सके। जनता का कहना है कि यदि समस्या का समाधान समय रहते नहीं किया गया तो वे मजबूरन रोड जाम, कार्यालय घेराव और बिल बहिष्कार जैसे कदम उठाएंगे।

स्कूल में कंप्यूटर लैब स्थापित

- रोटरी क्लब ऑफ सोनीपत अर्डेंट ने करवाई स्थापित

सोनीपत। रोटरी क्लब ऑफ सोनीपत अर्डेंट ने गढ़ी ब्राह्मणा स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में एक अत्याधुनिक कंप्यूटर लैब की स्थापना की। क्लब द्वारा विद्यालय को 8 कंप्यूटर भेंट किए गए, जिससे छात्र-छात्राओं को डिजिटल शिक्षा का सीधा लाभ मिलेगा।

इस अवसर पर क्लब के अध्यक्ष राजेश कटारिया ने कहा कि डिजिटल इंडिया के इस युग में तकनीकी शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। इन कंप्यूटरों से विद्यार्थियों को नई तकनीकों को सीखने और अपने भविष्य को सशक्त बनाने का अवसर मिलेगा। इस कार्यक्रम में क्लब के पूर्व अध्यक्ष अशु नागपाल, संजय कुकरेजा, अतुल खट्टर और विद्यालय के प्रधानाचार्य व शिक्षकगण उपस्थित रहे। सभी ने इस सहयोग के लिए रोटरी क्लब का धन्यवाद किया और इसे बच्चों के लिए एक उपयोगी संसाधन बताया। विद्यालय प्रशासन ने रोटरी क्लब ऑफ सोनीपत अर्डेंट का आभार व्यक्त किया।

सोनीपत। कंप्यूटर लैब का उद्घाटन करते हुए क्लब पदाधिकारी एवं सदस्यगण।

डीसीआरयूएसटी में प्रवेश स्थल का निरीक्षण

- मुरथल व सोनीपत बस स्टैंड से सुबह लेकर आएगी व एडमिशन के बाद छोड़कर आएगी विश्वविद्यालय की बस

हरिभूमि न्यूज ⏭सोनीपत

दीनबंधु छोटू राम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल के कुलगुरु प्रो. श्रीप्रकाश सिंह ने संबंधित अधिकारियों के साथ एडमिशन स्थल का निरीक्षण किया। अभ्यर्थियों को प्रवेश के लिए किसी भी सुविधा के लिए इधर उधर भटकना नहीं पड़ेगा, बल्कि एक छत के नीचे सभी सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए संबंधित अधिकारियों को कुलगुरु प्रो. सिंह ने दिशा निर्देश दिए। ताकि विद्यार्थियों/अभ्यर्थियों को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े फीस देने के लिए बैंक के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे, बल्कि बैंक की तरफ से एडमिशन स्थल पर ही सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। इसके अतिरिक्त मेडिकल के लिए भी सुविधाए एडमिशन स्थल पर ही उपलब्ध रहेंगी। कुलगुरु प्रो. सिंह ने कहा कि कई बार अभ्यार्थी /विद्यार्थी जल्दी में अपने कई कागज की फोटो कॉपी कराना भूल जाते हैं बाद वे फोटो कॉपी कराने के लिए इधर-उधर घूमना पड़ता है। अब विश्वविद्यालय प्रशासन ने एडमिशन स्थल पर ही फोटो कापी की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। इसके अतिरिक्त पीने के पानी की व्यवस्था भी की गई है। विश्वविद्यालय में कैंटीन चला रहे वेंडर चाय व अन्य खाद्य सामग्री की सुविधा भी विश्वविद्यालय में एडमिशन स्थल पर रहेगी।

सोनीपत। एडमिशन स्थल का निरीक्षण करते हुए कुलगुरु साथ में अधिकारीगण।

ये रही व्यवस्था

एडमिशन होने के बाद विश्वविद्यालय की बस दोपहर बाद 3:30,4:30 व 5:30 से मुरथल चौक व सोनीपत बस स्टैंड पर छोड़ कर आने के लिए उपलब्ध रहेगी। इस अवसर पर कुलगुरु ने हैड कंस्ट्रक्शन डिवीजन प्रो.विजय शर्मा, कोर्डिनेटर प्रो. दिनेश सिंह, को-ऑर्डिनेटर डा.संजीव इंदौरा व अन्य संबंधित अधिकारियों के साथ एडमिशन स्थल का दौरा किया व मौके पर ही अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

कन्या विद्यालय में पूर्व छात्रा सम्मेलन आयोजित

हरिभूमि न्यूज ⏭सोनीपत

आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पूर्व छात्रा मिलन समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें पूर्व छात्राओं ने अपने अनुभव, जीवन की सफलताओं और विद्यालय से मिली सीख को साझा किया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों, उपलब्धियों की प्रदर्शनी और स्मृति चिह्न वितरण जैसे कार्यक्रमों ने समागम को विशेष बना दिया। इस अवसर पर समाज में प्रतिष्ठित पदों पर आसीन रही पूर्व छात्राओं— ज्योति जुनेजा, गीतांजलि ग्रोवर, डॉ. ऊषा मुखी, सुषमा विज, मधु वालिया, मंजू अरोड़ा, प्रवीण कक्कड़ व सीमा देवगन को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। विद्यालय के प्रधान अजय गर्ग ने कहा, आपकी सफलता विद्यालय की प्रेरणा है। प्रधानाचार्या सुनीता अहलावत ने सभी का आभार जताया। मंच संचालन मोनिका और किरण ने किया, जबकि सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की तैयारी मोनिका, किरण व मीनाक्षी द्वारा करवाई गई। कार्यक्रम को सफल बनाने में शिक्षिकाओं, सचिव सुरेश गुप्ता, वरिष्ठ सदस्य ईश्वर दयाल, देवेन्द्र कुच्छल, मनोज गर्ग, विरेन्द्र कटारिया, प्रवीण वर्मा और मीडिया प्रभारी संजय सिंगला का सहयोग सराहनीय रहा।

सोनीपत। कार्यक्रम के दौरान पूर्व छात्र साथ में विद्यालय प्रबंधक एवं स्टाफ।

मानसिक तनाव पर कार्यशाला में मंथन

- स्वर्णप्रस्थ पब्लिक स्कूल क्षमता संवर्धन कार्यशाला का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭राई

स्वर्णप्रस्थ पब्लिक स्कूल में सीबीएसई द्वारा निर्धारित क्षमता संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत एक दिवसीय स्ट्रेस मैनेजमेंट पर आधारित कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में मीनू अहलावत उपस्थित रहीं। कार्यक्रम की औपचारिक शुरूआत वाणी की देवी सरस्वती की पूजा अर्चना एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुई। कार्यशाला में मानसिक तनाव से मुक्ति के उपायों पर विस्तार से चर्चा की। एक शिक्षक के तौर पर हम स्वस्थ मस्तिक एवं स्वस्थ शरीर से ही शिक्षण कार्य को प्रभावी बना सकते हैं। भागदौड़ भरी जिंदगी में मानसिक तनाव के बहुत से कारक हैं, लेकिन हमें इनके बीच खुश रहने के कारण ढूंढने होंगे, तभी हम अपने पेशे के साथ न्याय कर सकते हैं। विद्यालय के प्रधानाचार्य रोहित पंडा, मुख्याध्यापक एसपी सिंह,मुख्याध्यापिका मेघा कौशिक आदि शिक्षक मौजूद रहे।

राई। आयोजित कार्यशाला में उपस्थित मुख्य वक्ता मीनू अहलावत एवं शिक्षक समूह।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 0130-2989288, 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नही हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

विधायक ने कॉलोनियों का दौरा किया

नालों की सफाई सुनिश्चित करें अधिकारी

- दूषित पेयजल आपूर्ति जैसी समस्याओं का हाल देखने के लिए विधायक निखिल मदान ने किया शहर में आधा दर्जन कालोनियों का दौरा

हरिभूमि न्यूज ⏭सोनीपत

शनिवार को विधायक निखिल मदान ने शहर की आधा दर्जन कालोनियों का दौरा किया और वहां पर सीवरेज ओवरफ्लो और पेयजल आपूर्ति संबंधी समस्याओं को सुना और मौके पर ही मौजूद निगम अधिकारियों को त्वरित समाधान के दिशा निर्देश दिए। विधायक निखिल मदान ने निगम अधिकारियों के साथ प्रगति नगर, भरतपुरी, विशाल नगर और सरदारों वाली गली में मौके पर पहुंच कर सीवरेज ओवरफ्लो की समस्या का हाल देखा और समाधान करवाया। विधायक निखिल मदान प्रगति नगर में पहुंचे जहां उन्होंने डेरी संचालक द्वारा सीवरेज लाइन में गोबर और अन्य गंदगी बहाने के कारण पैदा हुई सीवरेज ओवरफ्लो और दूषित जल भराव की समस्या का निरीक्षण किया।

विधायक निखिल मदान ने मौके पर ही मशीन बुलवाकर सीवर लाइन की सफाई करवाई तथा डेयरी संचालक को गोबर और किसी भी प्रकार की गंदगी सीवरेज लाइन में ना बहाने की सख्त हिदायत दी। निखिल मदान ने कहा कि आज डेयरी संचालक का सीवरेज लाइन में गोबर बहाने के कारण चालान किया गया है। अगर आगे भी इसी तरह की गतिविधि डेयरी संचालक द्वारा की जाती है तो डेयरी को सील भी किया जाएगा। इसके पश्चात विधायक निखिल मदान विशाल नगर गली नंबर 2 में पहुंचे जहां उन्होंने पेयजल आपूर्ति में सीवरेज का पानी आने की शिकायत का संज्ञान लिया और मौके पर ही निगम अधिकारियों को बुलाकर सीवरेज लाइन की सफाई करवाने का आदेश दिए। साथ ही निखिल मदान ने बताया कि विशाल नगर की सीवरेज लाइन क्षतिग्रस्त हो चुकी है जिसके कारण सीवरेज का पानी पेयजल आपूर्ति की पाइप लाइन में जा रहा है, इसको ठीक करने और नई लाइन बिछाने के आदेश उन्होंने निगम अधिकारियों को दिए हैं, जिस पर आगामी एक सप्ताह में कार्य को पूरा किया जाएगा। साथ ही पानी की वाल्व वाले स्थान को साफ किया जाएगा ताकि उसमें सीवरेज का पानी ना जाने पाए। इसके पश्चात विधायक निखिल मदान ने भरतपुरी का दौरा किया और वहां पर भी सीवरेज लाइन की सफाई करवाई और नई सीवरेज लाइन बिछाने के आदेश दिए।

सोनीपत। निरीक्षण के दौरान विधायक निखिल मदान साथ में अन्य।

ये रहे मौजूद

इस दौरान निगम पार्षद नवीन तंवर, निगम पार्षद अतुल जैन, निगम कनिष्ठ अभियंता सचिन शर्मा, परसराम, रोहताश, सुनील, रविकांत, दीपक शर्मा, रोहित नागर, नरेंद्र, अजीत, सोनू प्रजापत, जोगेंद्र सेठा प्रजापति, जगभूषण शर्मा राजकुमार शर्मा, सूरजभान जैन, राकेश जांगड़ा, मुकेश, आशीष, पवन कुमार शर्मा, अरविंद शर्मा, मनोज गुप्ता, शीला देवी, रेणु, बबीता, सुनीता, सिद्धार्थ महेंद्र, दयानंद, शौकीन कृष्ण, नरेंद्र, आदि लोग मौजूद रहे।

सोनीपत। सफाई अभियान के तहत स्वीपिंग मशीन से सफाई करवाते मेयर राजीव जैन एवं अन्य।

एक से चलेगा 'सफाई अपनाओ बीमारी भगाओ' अभियान : जैन

हरिभूमि न्यूज ⏭सोनीपत

नगर निगम सोनीपत द्वारा 1 जुलाई से 31 जुलाई तक 'सफाई अपनाओ, बीमारी भगाओ' अभियान चलाया जाएगा। इस दौरान हर वार्ड में सफाई एवं जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। शनिवार को स्वच्छ, सुंदर एवं स्वस्थ सोनीपत अभियान के तहत छठे शनिवार को विशेष सफाई अभियान महाराणा प्रताप चौक से फाजिलपुर मोड़, गोहाना रोड बाईपास से जाहरी रोड फ्लाईओवर और चंद्र गार्डन तक चलाया गया। सबसे पहले महाराणा प्रताप चौक पर स्थापित मूर्ति परिसर की सफाई की गई और रोड स्वीपिंग मशीन से सड़कों के किनारे जमा कूड़ा-मिट्टी हटाई गई। मेयर राजीव जैन ने दुकानदारों से सफाई बनाए रखने की अपील करते हुए कहा कि आगामी अभियान में हाथों की स्वच्छता, घरों में पानी जमा न होने देना, साफ शौचालय, मच्छरनाशक दवा का छिड़काव करने के निर्देश दिए। इस मौके पर कर्तव्यनिष्ठ सफाई कर्मचारियों रानी और अशोक को नगद राशि देकर सम्मानित किया गया। अभियान में अधिवक्ता नकिन मेहरा, विनोद व अन्य मौजूद रहे।

स्पेशल: वर्ल्ड सोशल मीडिया डे
30 जून

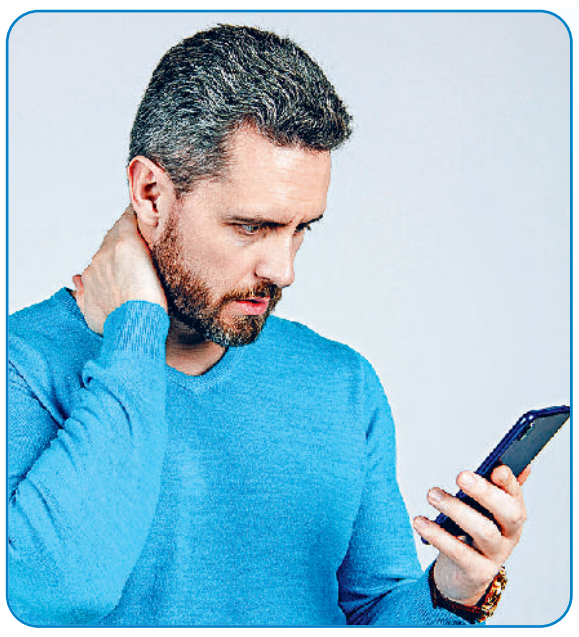

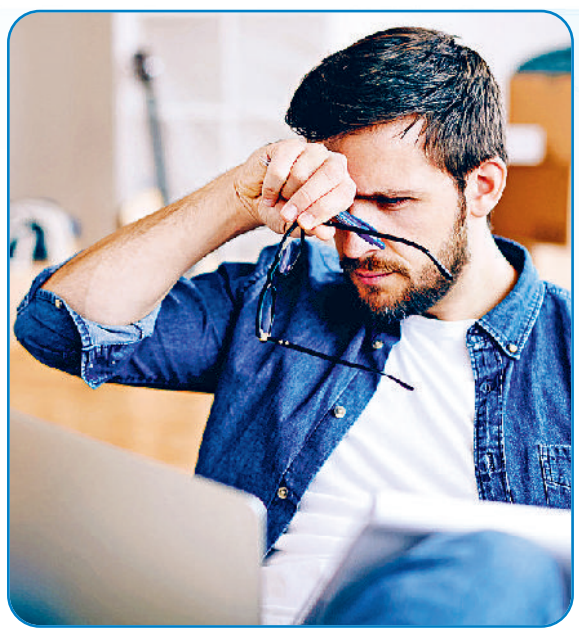

इन दिनों हर उम्र के लोग सोशल मीडिया के एडिक्शन में उलझे हुए हैं। इस एडिक्शन से घंटों गैजेट्स से चिपके रहने और गलत अंदाज में उसे ऑपरेट करने से कई तरह की फिजिकल प्रॉब्लम्स लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रही हैं। यही नहीं इसकी लत लोगों को मानसिक रूप से भी बीमार बना रही है। वो कौन सी बीमारियां हैं और इनसे बचने के लिए क्या उपाय अपना सकते हैं, इस बारे में आपको जरूर जानना चाहिए।

तन-मन को कर रहा बीमार
सोशल मीडिया एडिक्शन

कवर स्टोरी
डॉ. मोनिका शर्मा

आमतौर पर सोशल मीडिया एडिक्शन के नेगेटिव इफेक्ट्स को मानसिक सेहत से ही जोड़कर देखा जाता है। परिचित-अपरिचित लोगों की सुंदर तस्वीरों और अच्छी-बुरी सूचनाओं का मेल मन को नकारात्मक रूप से प्रभावित भी करता है। यहां ध्यान रखना जरूरी है कि सोशल मीडिया में हर तरह के कंटेंट को देखते रहना फिजिकल हेल्थ पर भी बुरा असर डालता है। शरीर के बहुत अंग स्क्रीन स्क्रॉलिंग को दिए जाने वाले समय के नेगेटिव असर को झेलते हैं।

स्किन-विजन पर दुष्प्रभाव

सोशल मीडिया अपडेट्स को देखने के लिए हरदम स्क्रीन में झांकते रहना, आंखों की रोशनी छीन रहा है। बच्चे-बड़े सभी की आईसाइट कमजोर हो रही है। आंखों में सूखापन, थकान और दूसरी समस्याएं बढ़ रही हैं। रात को सोते समय कम रोशनी में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को स्क्रॉल करना तो आंखों पर सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव डाल रहा है। वर्चुअल वर्ल्ड में पल-पल दिखती दूसरों की अपडेट्स इतनी इंटरेस्टिंग लगती हैं कि बिना ब्रेक स्मार्ट फोन की स्क्रीन में देखते रहने की लत लग जाती है। रिसर्च फर्म 'रेडसियर' के अनुसार हमारे यहां हर यूजर हर दिन औसतन 7.3 घंटे अपने स्मार्टफोन की स्क्रीन पर बिता रहा है। इसमें से ज्यादातर टाइम सोशल मीडिया पर बीत रहा है। इस डिजिटल व्यस्तता से सिरदर्द के साथ ही आंखों में तनाव एवं थकान भी बढ़ती है। मौजूदा समय में अधिकतर यूजर्स की आंखें यह डिजिटल स्ट्रेस झेल रही हैं। अंधेरे में भी स्क्रीन स्क्रॉल करने की आदत ना केवल तेजी से नजर कमजोर करती है बल्कि आंखों के नीचे डार्क सर्कल्स का भी कारण बनती है। इतना ही नहीं कई लोगों को स्मार्ट फोन से निकलने वाली ब्लू लाइट से चेहरे पर डार्क स्पॉट और पिगमेंटेशन की समस्या हो सकती है। असल में ब्लू लाइट त्वचा के रोम-रोम में समाते हुए स्किन में खुजली, रूखापन और टैनिंग की समस्या की भी वजह बनती है।

बिगड़ता बॉडी पोश्चर

पार्क में वॉक करते हुए, बिस्तर पर आराम करते हुए, गाड़ी चलाते हुए या जिम में एक्सरसाइज करते हुए। लोग हर समय स्मार्ट गैजेट्स की स्क्रीन खंगालते रहते हैं। इसका कारण सोशल मीडिया में मौजूदगी दर्ज करवाना ही है। असल दुनिया में अनुपस्थित होने से एक ओर उस समय की जा रही एक्टिविटी पर फोकस नहीं करते तो दूसरी ओर शरीर के विशेष अंगों पर अधिक दबाव भी पड़ता है। फोन की स्क्रीन में नीचे की तरफ देखते रहने से टेक नेक की समस्या बढ़ रही है। यह हेल्थ प्रॉब्लम गर्दन में दर्द, अकड़न और सिरदर्द से जुड़ी है। साथ ही स्क्रीन स्क्रॉलिंग बैक पेन और कंधों के दर्द से जुड़ी परेशानियों की भी वजह साबित हो रही है। आड़े-टेढ़े बॉडी पोश्चर में लोग घंटों सोशल मीडिया देखते रहते हैं। लगातार गलत शारीरिक स्थिति में बैठने से कई हड्डियों से जुड़ी समस्याएं पैदा हो रही हैं। सोशल मीडिया अपडेट्स देखते हुए लोग कुछ न कुछ लिखते भी हैं। गलत पोश्चर में टाइपिंग करने से 'टेक्स्ट नेक' की परेशानी बढ़ रही है। ध्यान रहे कि इंसानी शरीर पर अपने सिर का वजन 4.5 किलो से 5.4 किलो तक होता है। लेकिन फोन देखने के लिए गर्दन झुकाने पर ग्रैविटी के कारण सिर पर पड़ने वाला भार करीब 27 किलो तक हो जाता है। फोन को हरदम हाथ में थामे रहने से कलाई और स्क्रॉलिंग से अंगूठे में दर्द और नर्व्स में सुन्नपन की तकलीफ भी होने लगती है।

शारीरिक निष्क्रियता

हाल के वर्षों में सोशल मीडिया पर बीत रहे समय ने हर एजग्रुप के लोगों की फिजिकल एक्टिविटी कम कर दी है। इससे कम उम्र में ज्वॉइंट पेन और शरीर की जकड़न जैसी परेशानियां आ रही हैं। असल में हड्डियों के ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ना जकड़न और दर्द का अहम कारण होता है। फिजिकली एक्टिव ना रहना इस परेशानी को बढ़ाता है। बफेलो यूनिवर्सिटी की स्टडी के अनुसार सोशल मीडिया का हद से ज्यादा इस्तेमाल से सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ सकता है। यह स्थिति ज्वॉइंट्स में सूजन बढ़ने से जुड़ी है। सी-रिएक्टिव प्रोटीन का स्तर बढ़ना शारीरिक अंगों में दर्द ही नहीं हृदय रोग और मधुमेह जैसी गंभीर हेल्थ इश्यूज की जड़ भी बन सकता है। देखने में आ रहा है कि पल-पल सामने आती रील्स, मीम्स देखते हुए गुजर रहा समय बेवजह की व्यस्तता का कारण बन गया है। इसके कारण लोगों में मोटापा भी बढ़ रहा है। शारीरिक छवि के मोर्चे पर सोशल मीडिया में दिखती तस्वीरों और वीडियोज के कारण बच्चों से लेकर बड़ों तक, अपने ही शरीर की बनावट के प्रति नापसंदगी की सोच भी आ रही है। ऐसे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर बीत रहे समय को सीमित करना आवश्यक है। साथ ही समय-समय पर ब्रेक लेना और स्मार्ट गैजेट्स इस्तेमाल करते हुए बॉडी पोश्चर को सही रखना भी अहम है। *

बिगड़ रही मानसिक सेहत

सोशल मीडिया एडिक्शन का हमारी मेंटल हेल्थ पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे स्ट्रेस, डिप्रेशन, एंग्जाइटी और चिड़चिड़ेपन की समस्याएं लोगों में काफी बढ़ने लगी हैं। लोग घर में रहते हुए भी एक दूसरे से कम बात करते हैं। सोशल इंटरेक्शन कम होता जा रहा है। अपनी रियल लाइफ के बजाय वर्चुअल लाइफ को इंप्रेसिव बनाने के ज्यादा प्रयास किए जाते हैं। इससे स्ट्रेस का स्तर बढ़ता है। ऐसे में सोशल मीडिया का कंट्रोल्ड यूज करना मेंटल हेल्थ के लिए भी बहुत जरूरी है।

टेक्नोबिहेवियर
नौशाबा परवीन

सोशल मीडिया यूजर्स
एटिकेट्स का रखें ध्यान

लगभग दो दशक की अपनी विकास यात्रा में सोशल मीडिया ने समाज के बहुत बड़े वर्ग को प्रभावित किया है। लेकिन इसके पॉजिटिव यूज के साथ जमकर मिसयूज भी किया जाता है। इसके एटिकेट्स के बारे में न केवल आपको पता होना चाहिए, उसे फॉलो भी करना चाहिए।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि सोशल मीडिया ने लोगों के परिवार, दोस्तों और दुनिया के साथ बातचीत, संवाद और साझा करने के तरीकों को नए सिरे से परिभाषित किया है। हमारे जीवन में सोशल मीडिया के महत्व का अंदाजा दो मुख्य बातों से लगाया जा सकता है। एक, संकोची स्वभाव के जो लोग महफिलों में कुछ कह नहीं पाते थे, वह भी सोशल मीडिया पर खुलकर अपने विचार रखते हैं बल्कि अपनी हर बात कह लेते हैं, क्योंकि यह माध्यम 'पर्दे के पीछे' से भी अपने विचार (अच्छे या बुरे) व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। दूसरा यह कि सोशल मीडिया के जरिए राजनीतिक दलों से लेकर आम आदमी तक लोगों को इंफ्लुएंस (प्रभावित) करने का प्रयास करते हैं। इस वजह से इंफ्लुएंसर्स की एक नई जमात खड़ी हो गई है, विशेषकर इसलिए कि सोशल मीडिया, कंटेंट क्रिएटर्स को अच्छा पैसा कमाने का मौका भी देता है। इन महत्व के चलते मां दिवस, पिता दिवस आदि की तरह हर साल 30 जून को सोशल मीडिया दिवस भी मनाया जाने लगा है, जिसकी शुरुआत 2010 में मेंशेबल ने की थी।

ऐसे होता गया पॉपुलर: सोशल मीडिया के पॉपुलर होने का सिलसिला 2002 में फ्रेंडस्टर और 2003 में माईस्पेस के लांच होने से शुरू हुआ और इसके बाद 2004 में सोशल मीडिया के सबसे पॉपुलर प्लेटफॉर्म फेसबुक की स्थापना हुई। ट्विटर (जो अब एक्स हो गया है) ने हमें संक्षिप्त होने के लिए प्रोत्साहित किया कि 140 से कम अक्षरों में ही अपने विचार व्यक्त करने हैं। जिसे बाद में बढ़ाकर 280 कर दिया गया। इंस्टाग्राम और फ्लिकर ने ऐसी इमेजरी के जरिए खुद को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया, जिसे हम संभाल सकते हैं। अगर वीडियो की बात करें तो टिक-टॉक और यू-ट्यूब मौजूद हैं। अभिव्यक्ति के लिए जब इतने मंच हों तो सोशल मीडिया दिवस मनाना आसान हो जाता है कि अपने पसंदीदा प्लेटफॉर्म पर कुछ पोस्ट किया जाए, मीम शेयर किए जाएं या किसी ऐसे व्यक्ति से जुड़ें जिससे लंबे समय से बात नहीं हुई है। अब तो अलग-अलग शहरों में सोशल मीडिया मीटिंग्स के जरिए भी इसकी पॉपुलैरिटी का जश्न मनाया जाता है।

होता है भरपूर मिसयूज: कोई चीज कितनी ही अच्छी क्यों न हो, उसका एक बुरा पहलू भी होता है। सोशल मीडिया भी इसका अपवाद नहीं है। अपने फॉलोवर्स बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक कंटेंट क्रिएटर्स फेक न्यूज, क्लिक बेट (यानी वीडियो पर ऐसा थंब नेल लगाना, जिसका कंटेंट में जिक्र ही न हो) आदि का प्रयोग करते है। गलत धार्मिक या जातिगत आधारित कंटेंट से लोगों की भावनाओं को भी ठेस पहुंचाया जाता है। सोशल मीडिया पर झूठ बहुत बड़ा कारोबार है। इसे रोकने के लिए नियम और कानून अवश्य हैं, लेकिन इनका उल्लंघन भी काफी किया जाता है। साथ ही सरकारें और सामाजिक-राजनीतिक संगठन भी कंटेंट को नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं। अनेक कंटेंट क्रिएटर्स को जेल की हवा तक खानी पड़ी है। दुखद है कि महिलाओं को भी सोशल मीडिया के जरिए तरह-तरह से परेशान किया जाता है। कभी धमकी देकर, कभी ब्लैक मेलिंग, कभी धोखेबाजी में फंसाकर तो कभी उनके द्वारा पोस्ट किसी कंटेंट के लिए ट्रोलिंग के जरिए उन्हें प्रताड़ित करने का ट्रेंड काफी बढ़ गया है। चिंताजनक यह है कि कई बार तो कुछ लोग इतने असहनशील हो जाते हैं कि किसी कंटेंट के लिए हत्या करने जैसा जघन्य अपराध भी करने से नहीं कतराते। इक्कीसवीं सदी के ढाई दशक गुजरने और तकनीक के इतने विकसित दौर में समाज की ऐसी संकीर्ण सोच, विचारणीय है। सोशल मीडिया दिवस का जश्न मनाना तब ही अच्छा और सार्थक लगेगा, जब हम प्रण लें कि महिलाओं की ऑनलाइन ट्रोलिंग नहीं करेंगे और उनके विरुद्ध किसी भी तरह की हिंसा और अपराध का विरोध करेंगे।

ना भूलें ये एटिकेट्स: सोशल मीडिया का पॉजिटिव यूज करने के लिए उसे ऑपरेट करते समय इसके कुछ एटिकेट्स को याद रखा जाना चाहिए। जैसे- ऑनलाइन बातचीत करते समय अपनी रियल आइडेंटिटी में रहें। किसी से फ्रेंडशिप करने के लिए पहले उसके विचारों को कंटेंट को समझें, लाइक करें, कमेंट करें फिर दोस्ती की तरफ आगे बढ़ें। ऑनलाइन चैटिंग करते समय विनम्र और पेशेवर लहजे का प्रयोग करें। ऑनलाइन कंटेंट साझा करते समय मूल स्रोत की विश्वसनीयता को परख लें। *

कविता
हरीश कुमार 'अमित'

सब्र

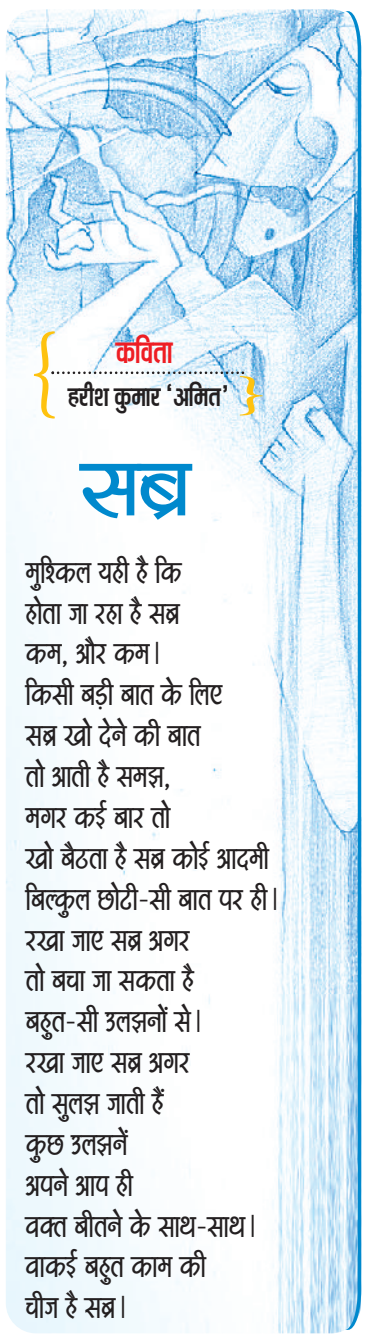

मुश्किल यही है कि
होता जा रहा है सब्र
कम, और कम।
किसी बड़ी बात के लिए
सब्र खो देने की बात
तो आती है समझ,
मगर कई बार तो
खो बैठता है सब्र कोई आदमी
बिल्कुल छोटी-सी बात पर ही।
रखा जाए सब्र अगर
तो बचा जा सकता है
बहुत-सी उलझनों से।
रखा जाए सब्र अगर
तो सुलझ जाती हैं
कुछ उलझनें
अपने आप ही
वक्त बीतने के साथ-साथ।
वाकई बहुत काम की
चीज है सब्र।

व्यंग्य / संदीप भटनागर

मुर्गे और खंजर

मुर्गों की किस्मत में मुर्गियां कम, खंजर ज्यादा होते हैं। ये खंजर कभी उनकी गर्दन पर होते हैं तो कभी पांव में बंधे। यह समझना आसान है कि दुनिया में पहले मुर्गा आया होगा फिर खंजर।

छुट्टी का दिन होने के नाते सामने वाले मैदान में चहल-पहल कुछ ज्यादा थी। बड़े से मैदान का एक कोना मुर्गेबाजों के लिए रिजर्व रहता है। सामान्य तौर पर यह जगह मुर्गा बाजार के रूप में जानी जाती है, जहां आम दिनों में मुर्गों की खरीद-फरोख्त होती है और छुट्टी के दिन खरीदे गए मुर्गों की जोर-आजमाइश।

लड़ने वाले मुर्गों की कीमत से कई गुना ज्यादा पैसे दांव पर लग जाते हैं।

मेरे लिए यह जानना रोचक था कि जिंदा रहते हुए लड़ते मुर्गे देश की जी.डी.पी. में कितना योगदान करते हैं? मुर्गा बाजार में खंजर बेचने वाला भी बैठता है। आम दिनों में उसके पास सामान्य खंजर होते हैं लेकिन मुर्गेबाजी वाले दिन उसके पास मुर्गों के पांव में बांधने वाले विशेष खंजर होते हैं। मुर्गों के मालिक से लेकर दांव लगाने वाले तक अपनी पसंद के मुर्गों के लिए एक से एक कातिल खंजर खरीदते हैं ताकि वो प्रतिद्वंद्वी मुर्गे को ज्यादा से ज्यादा चोटिल कर मुकाबला जीत सके।

जी-जान से लड़ने वाले मुर्गे यह नहीं जानते कि जिबह तो हारने वाले और जीतने वाले दोनों मुर्गों को होना ही है। किसी को आज तो किसी को कल। इस मुकाबले में लड़ाने वालों की अपनी साख और प्रतिष्ठा दांव पर लगी होती है और तमाशबीनों का पैसा, जबकि लड़ने वाले मुर्गों की अपनी जान दांव पर लगी होती है। पूरे तमाशे में खंजर बेचने वाले के खंजरों की मारक क्षमता भी दांव पर लगती है। जितना मारक खंजर उतनी ज्यादा डिमांड।

बावजूद इसके इस पूरे खेल में हमेशा खंजर बेचने वाला ही फायदे में रहता है। वह खंजर हारने वाले को भी बेचता है, जीतने वाले को भी बेचता है और दांव लगाने वालों को भी। मुर्गेबाजी का इतिहास सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है। इंसान ने अपने मनोरंजन के लिए मुर्गों को लड़ना सिखाया था। मानव सभ्यता के विकास के साथ मुर्गेबाजी के इस तरीके को क्रूर मानते हुए इसे असभ्य करार दे दिया गया। विकसित होती दुनिया में इसे अब नए ढंग से खेला जाने लगा। नवीन खेल में मुर्गों को मुर्गे होने का अहसास नहीं होने दिया जाता। लगातार उन्हें ऐसा महसूस कराया जाता है कि तुम्हारे अस्तित्व के लिए तुम्हें लड़ना जरूरी है। नवीन खेल में कमजोर मुर्गों पर भी दांव लगाया जाने लगा, जिन्हें विकसित भाषा में इन्वेस्टमेंट कहा जाने लगा। उनके माध्यम से आधुनिक खंजरों का परीक्षण कर दुनिया में दूसरे मुर्गों को बेचा जाने लगा। कुछ मुर्गों को अत्याधुनिक खंजरों से लैस कर इतना शक्तिशाली बना दिया गया कि वो अब अपने मालिक के इशारे पर लड़ने के बहाने तलाश कर किसी भी मुर्गे से लड़ने को तैयार रहते हैं।

खंजर के सौदागरों ने पूरी दुनिया को मुर्गेबाजी का अखाड़ा बना दिया। खेल में रोज हलाक होने वाले जानवर नहीं इंसान हैं इसलिए इस नए खेल पर दुनिया का कोई भी पशु क्रूरता अधिनियम लागू नहीं होता।

इस नए खेल में आज भी पुराने खेल के कुछ नियम लागू हैं। यह खेल अभी भी मालिकों की प्रतिष्ठा और ईगो के लिए खेला जा रहा है। इस खेल में आज भी खंजर के सौदागर नफे में हैं। वे कमजोर और शक्तिशाली दोनों मुर्गों को अपने खंजर बेच कर मुनाफा पीट रहे हैं। आज भी जिंदा लड़ते मुर्गे खंजर बनाने वाले मालिकों के देश की जी.डी.पी. को बढ़ा रहे हैं और जो मुर्गे लड़ नहीं रहे हैं, वो अपनी बारी का इंतजार कर रहे हैं। *

लघुकथा
अशोक वाधवाणी

दिव्यांग का सम्मान

आलोक किसी काम के सिलसिले में एक जान-पहचान वाले दंपती के घर पहुंचे। औपचारिक अभिवादन और चाय-पानी के बाद उनसे बातचीत में व्यस्त हो गए। इतने में छठी कक्षा में पढ़ने वाला उनका बेटा बाहर से घर के अंदर आया। वह सीधे ड्रॉइंग रूम में पहुंचा जहां आलोक उसके मम्मी-पापा के साथ बैठे थे। आते ही उसने अपनी मां के हाथ में दो सौ रुपए का नोट पकड़ाते हुए बोला, 'मम्मी, वो जो पड़ोस में अंधी खुशबू दीदी रहती हैं न, उन्होंने ये पैसे दिए हैं।'

किसी दिव्यांग के बारे में इस तरह के बोल सुनकर आलोक को बहुत बुरा लगा। उसने बच्चे को प्यार से समझाया, 'देखो बेटा, किसी की शारीरिक कमजोरी का ऐसे मजाक नहीं उड़ाते हैं। विकलांग लोगों को आजकल दिव्यांग कहकर पुकारा जाता है, यह एक पॉजिटिव सोच की निशानी है। संबोधन बदलने के बाद भी लोगों के व्यवहार में कोई सुधार नहीं हुआ है, जो गलत बात है। उसके माता-पिता ने बड़े चाव से अपनी बेटी का सुंदर सा नाम रखा होगा खुशबू! बेटा, तुम्हें हर किसी दिव्यांग का नाम पूरे मान-सम्मान के साथ लेना चाहिए। सिर्फ खुशबू दीदी भी तो कह सकते थे।'

'हमारे घर में सभी उन्हें अंधी खुशबू ही तो कहते हैं।' बच्चे ने बड़े भोलेपन से बताया।

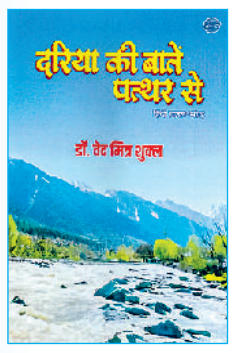

आलोक ने दंपती की ओर देखा, वे दोनों उससे नजरें नहीं मिला पा रहे थे। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

बहुरंगी गजलों का कोलाज

वेद मित्र शुक्ल दिल्ली विवि में अंग्रेजी पढ़ाते हैं लेकिन वे अंग्रेजी के साथ ही हिंदी साहित्य में रचनात्मक रूप से काफी सक्रिय हैं। इसका प्रमाण हैं, कई विधाओं में प्रकाशित उनकी मौलिक और संपादित ढेरों पुस्तकें। कुछ समय पहले उनका दूसरा गजल संग्रह 'दरिया की बातें पत्थर से' प्रकाशित हुआ है। इसमें उनकी गजलगोई के कई आयाम देखे जा सकते हैं। समय, समाज और जीवन के बेशुमार स्याह-श्वेत पहलू इन गजलों में उजागर हुए हैं। कहीं वे बढ़ते शहरीकरण के चलते बिखरते रिश्तों की टीस बयां करते हैं, *'गांवों से आ बसे शहर में खोए हैं सब रिश्ते नाते/गीतों में ही देवर-भाभी, जीजा-साली होली खेलें।'* तो कहीं समाज में छीजती जा रही मनुष्यता को लेकर वह अपनी चिंता ऐसे प्रकट करते हैं, *'तिल रखने की जगह नहीं पर/ अच्छे लोग बहुत ही कम हैं।'* इसी तरह वे राजनीतिज्ञों के चारित्रिक अवमूल्यन को बेबाकी से बयां करते हैं, *'गांधी का इक दौर रहा था/घिन आती है अब खद्दर से।'* यानी जीवन के लगभग हर पक्ष पर वे गहरी नजर रखते हैं और अपने जज्बातों को बयां करने के लिए सटीक तासीर के शब्दों को गजल में पिरो देते हैं।

कह सकते हैं यह किताब वेद मित्र शुक्ल की बहुरंगी गजलों के कोलाज जैसी है। *

पुस्तक: दरिया की बातें पत्थर से (गजल संग्रह)
लेखक: डॉ. वेद मित्र शुक्ल, **मूल्य:** 290 रुपए,
प्रकाशक: सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

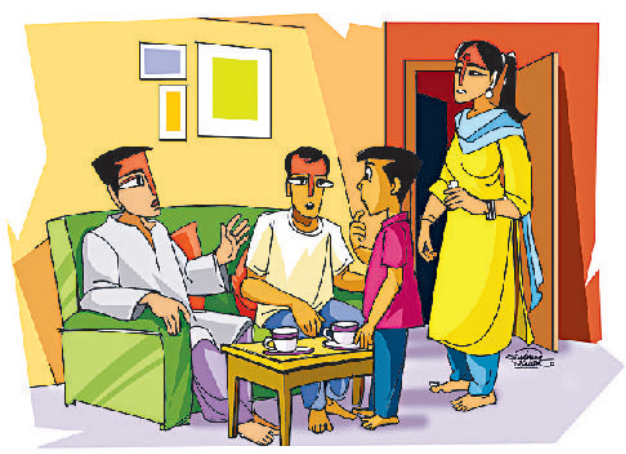

भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति का अनूठा केंद्र है अलाप्पुझा। बैकवार्टर्स पर्यटन, यहीं नहीं पूरे केरल की पहचान है। यहां का मोहक प्राकृतिक सौंदर्य, इसकी ऐतिहासिक-सांस्कृतिक विशिष्टता में चार चांद लगा देता है। यही वजह है कि मानसून में इस जगह का आनंद लेने के लिए दुनिया भर से पर्यटक आते हैं।

इस मानसून में घूम आएं भारत के वेनिस अलाप्पुझा

{ टूरिस्ट स्पॉट / लोकमित्र गौतम }

कोई शहर छोटा हो या बड़ा या चाहे कोई कस्बा ही क्यों न हो, हर शहर, हर महानगर और हर कस्बे की अपनी एक निजी पहचान, एक निजी विशेषता होती है, जो हर दूसरी जगह से अलग होती है। यही उस जगह की पहचान होती है, उसका लैंडमार्क कहलाता है। भारत के वेनिस कहे जाने वाले शहर अलाप्पुझा को 'बैकवाटर्स का स्वर्ग' कहा जाता है। यही यहां का लैंडमार्क माना जाता है।

घूमने के लिए बारिश है बेस्ट: भारत दुनिया के उन गिने-चुने देशों में से एक है, जहां हर मौसम के लिए विशिष्ट पर्यटन क्षेत्र को मुफीद माना जाता है। अगर भारत के पहाड़, गर्मियों में घूमने के लिए स्वर्ग हैं और भारत के समुद्रतट सर्दियों की गरमाइश भरी पसंदीदा जगहें हैं तो मानसून में घुमक्कड़ी का लुत्फ लेने के लिए केरल, पर्यटन का स्वर्ग कहा जाता है। लेकिन इस केरल में भी एक खास पर्यटन क्षेत्र है, अलेप्पी या अलाप्पुझा जिसे भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहा जाता है। इसे पूर्व का वेनिस भी कहते हैं। यहां के हाउसबोट (कुट्टनाड क्षेत्र में) पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं।

इसलिए अलाप्पुझा है विशिष्ट: केरल में यूं तो पूरे प्रदेश में ही बैकवाटर्स के अदभुत नजारे हैं- झीलें, नहरें, नदी तंत्र और तटीय लैगून ये सब मिलकर केरल को एक अद्भुत जल प्रदेश बनाते हैं। लेकिन केरल में भी जिस शहर को बैकवाटर्स स्वर्ग के नाम से जानते हैं, वो है- अलेप्पी या अलाप्पुझा। आज के अलाप्पुझा को अंग्रेजों के जमाने में अलेप्पी कहा जाता था। यह केरल के ऐतिहासिक नगरों में से एक है और इसे भारत के वेनिस होने का दर्जा हासिल है। अलेप्पी भारत के बैकवाटर्स का स्वर्ग माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि यहां की सुंदर झीलों और जलमार्गों तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसका एक गहरा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी है।

भौगोलिक स्थिति भी है अलग: अलेप्पी की भौगोलिक स्थिति भी इसे भारत का एक विशिष्ट शहर बनाती है। यह ऐतिहासिक शहर अरब सागर के किनारे स्थित है और इसके आस-पास की जमीन नदियों, नहरों, लैगून और झीलों से अटी पड़ी है। इस क्षेत्र को पहले कुट्टनाड के नाम से भी जाना जाता था, जो चावल की खेती और अपने जल परिवहन के लिए सदियों से प्रसिद्ध रहा है।

कम नहीं ऐतिहासिक महत्ता: प्राचीनकाल में यह क्षेत्र केरल के चेर साम्राज्य के अधीन था, तब यहां के राजा जलमार्गों को नियंत्रण करते थे, जो व्यापार के मुख्य साधन थे। दक्षिण भारत के अन्य भागों से मसालों, नारियल और अन्य उत्पादों का आदान-प्रदान इन्हीं जलमार्गों के जरिए होता था। लेकिन 18वीं और 19वीं शताब्दी में अलेप्पी एक प्रमुख बंदरगाह शहर के रूप में विकसित हुआ। जब केरल के प्रमुख बंदरगाह कोंडुगल्लरू में बाढ़ और भू-स्खलन के कारण व्यापार पूरी तरह से बाधित हुआ, तब तत्कालीन त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा और उनके उत्तराधिकारियों ने अलेप्पी को नया व्यापारिक केंद्र बनाने का निर्णय लिया। राजा मार्तंड वर्मा और उनके दीवान वेल्लुथंपी की इसमें निर्णायक भूमिका थी। उन्होंने यहां कृत्रिम नहरों और जलमार्गों का जाल बिछवाया ताकि नौकाओं और व्यापारिक जहाजों को यहां प्रवेश में सुविधा हो। यही वह समय था, जब अलेप्पी को भारत का वेनिस कहा जाने लगा। अलेप्पी धीरे-धीरे कपड़ों, मसालों, नारियल और चावल का प्रमुख निर्यातक केंद्र बन गया।

पहचान हैं अनोखी हाउसबोट्स: बैकवाटर्स यानी झीलों, नहरों और समुद्र से बने जलमार्ग, यही तो अलेप्पी की आत्मा है। यहां की प्रमुख झील वेंबनाड झील है, जो भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झीलों में से एक है। जब अलेप्पी का धीरे-धीरे बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकास होने लगा, तो यहां बड़े पैमाने पर पारंपरिक हाउसबोट, जिन्हें मलयालम भाषा में कैट्टुवल्लम कहा जाता है, विकसित होने लगे। ये कैट्टुवल्लम एक जमाने में बड़ा सा जहाज हुआ करता था, जिसने बाद में आधुनिक हाउसबोट का रूप ले लिया। आज अलेप्पी की पहचान इन्हीं हाउसबोट की वजह से है। अलेप्पी के ये हाउसबोट लकड़ी, नारियल की रस्सियों और केले के पेड़ों के पारंपरिक साधनों से बने होते हैं। इनमें अद्भुत स्थानीय कलाकारी को विभिन्न कलाकृतियों के रूप में देखा जा सकता है। अपनी इन्हीं खूबियों के कारण आज अलेप्पी भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लग्जरी पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हुआ है।

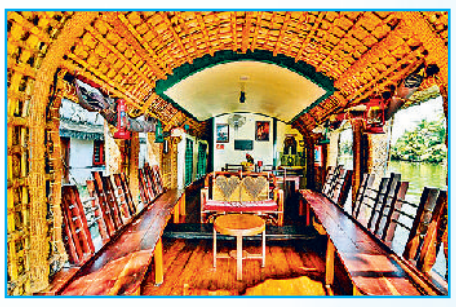

टूरिस्ट सेंटर के रूप में विकसित: सन 1990 के दशक में अलेप्पी को नए सिरे से एक बैकवाटर्स पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया गया। केरल की सरकार और यहां के स्थानीय लोगों ने पारंपरिक नावों को पर्यटकों के लिए हाउसबोट में बदला और आज अलेप्पी हाउसबोट टूरिज्म, आयुर्वेदिक स्पा, बर्ड वाचिंग और फिशिंग विलेज विजिट जैसी पर्यटन गतिविधियों के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। अलेप्पी के बैकवाटर्स का अनुभव केवल एक सौंदर्य नहीं बल्कि स्थानीय जीवनशैली, भोजन, जल परिवहन और प्रकृति के संतुलन को महसूस कराने वाली संस्कृति है। इसीलिए अलेप्पी को केरल के बैकवाटर्स का स्वर्ग कहते हैं। *

होता है हर वर्ष बोट्स रेस का आयोजन

हर साल अगस्त माह में यहां पुनमड़ा झील में नेहरू ट्रॉफी बोट रेस आयोजित होती है, जिसमें सैकड़ों लोग चुंदवल्ली यानी सांप जैसी मुंह वाली लंबी नावों पर सवार होकर रेस में शामिल होते हैं। यह रेस केवल खेल नहीं होती बल्कि केरल की समृद्ध संस्कृति का एक अनोखा उत्सव है। यह रेस 1952 में भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की यहां यात्रा के दौरान आरंभ हुई थी।

हाल में ही कश्मीर स्थित चिनाब नदी पर बने चिनाब ब्रिज की डिजाइन और तकनीकी विशेषताओं ने इसे दुनिया भर में चर्चा का विषय बना दिया है। इस ब्रिज की विशेषताओं पर एक नजर।

इंजीनियरिंग का नायाब नमूना चिनाब ब्रिज

{ अचीवमेंट / सुनील कुमार महला }

हाल ही में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर में नवनिर्मित चिनाब पुल का उद्घाटन किया। यह (चिनाब पुल) दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल है।

ब्रिज की खासियतें: चिनाब ब्रिज स्टील और कंक्रीट से बना आर्च ब्रिज है, जो रियासी जिले के बक्कल और कौरी गांवों को जोड़ता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह नदी के तल से 359 मीटर (लगभग 1,178 फीट) ऊंचा है। यानी यह पेरिस के मशहूर एफिल टॉवर से 35 मीटर और दिल्ली की कुतुब मीनार से करीब 5 गुना ऊंचा यानी कि 287 मीटर ऊंचा है। यह 266 किमी प्रति घंटे तक की हवा की गति का सामना कर सकता है। यह ब्रिज भूकंपीय क्षेत्र पांच में स्थित है इसलिए इसे इतना मजबूत बनाया गया है कि रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता के भूकंप को भी सहने में सक्षम है। यही नहीं इसे 40 टन टीएनटी के बराबर विस्फोट सहने में सक्षम बनाया गया है। इसमें ऐसे खास जंगरोधपेंट का इस्तेमाल किया गया है, जो इसे 20 साल तक जंग से बचाएगा। पुल में ऐसी तकनीक स्थापित की गई है कि कोई भी खतरा होने पर वार्निंग अलार्म खुद ही बजने लगेगा। पुल में 112 सेंसर लगाए गए हैं, जो हवा की गति, टेंपरेचर और कंपन आदि की जानकारी देंगे।

चिनाब ब्रिज : दुनिया का सबसे बड़ा आर्च ब्रिज

सवा सौ साल है उम्र: 1315 मीटर लंबा यह ब्रिज, उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक (272 किमी. लंबा) प्रोजेक्ट का हिस्सा है। इस पुल का निर्माण 1486 करोड़ की लागत से किया गया है। इस ब्रिज की नींव 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रखी थी। इसके निर्माण में 22 साल लगे और इसकी अनुमानित उम्र 120-125 साल है।

निर्माण में प्रयुक्त सामग्री: जानकारी के मुताबिक, इस ब्रिज को बनाने में 28,660 से 30,000 मीट्रिक टन स्टील का इस्तेमाल किया गया है। इसके साथ ही 46,000 क्यूबिक मीटर कंक्रीट का भी यूज हुआ है। इसके निर्माण में 6 लाख से ज्यादा नट बोल्ट भी यूज किए गए हैं। यह भी काबिले-तारीफ है कि इस पुल को बनाने में नदी के प्रवाह में अवरोध नहीं पहुंचाया गया है, नदी में कोई पिलर नहीं लगाया गया है, बल्कि इसे आर्च तकनीक से बनाया गया है। इस पुल को किसी हमले से बचने के लिए ब्लास्ट प्रूफ स्टील से तैयार किया गया है। इस ब्रिज के निर्माण में डीआरडीओ की अचूक प्लानिंग शामिल रही है। इसे बनाने के लिए उत्तर रेलवे के साथ कोंकण, अफकान और केआरसीएल ने काम किया। इसके साथ ही भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण जैसी संस्थाएं भी जुड़ी रहीं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसमें आईआईटी रुड़की और आईईटी दिल्ली ने भी अपना योगदान दिया है।

कई तरह से महत्वपूर्ण: यह अनोखा पुल न सिर्फ कश्मीर घाटी को पूरे भारत से जोड़ेगा, बल्कि क्षेत्र में व्यापार, पर्यटन और औद्योगिक विकास को भी नई गति देगा। चिनाब ब्रिज, दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। चिनाब रेलवे ब्रिज को बनाने में भले ही 22 साल लगे हों, लेकिन अब इसके शुरू होने के बाद कश्मीर घाटी और जम्मू के बीच सीधा रेल रास्ता बन जाएगा। यह पहली बार होगा जब लोग कन्याकुमारी से सीधे ट्रेन के जरिए कश्मीर घाटी तक जा सकेंगे। यह ब्रिज भी अपने आप में एक आकर्षक टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन गया है। इससे देश की सैन्य ताकत को भी कहीं न कहीं सपोर्ट मिलेगा, क्योंकि बर्फबारी के दिनों में कई बार कश्मीर से संपर्क कट जाता था। साथ ही कई क्षेत्रों में आपात स्थिति में सेना को अपनी मूवमेंट में इस बर्फबारी के समय काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। अब चिनाब रेलवे ब्रिज के निर्माण से हर मौसम में कश्मीर पहुंचना सेना के लिए आसान हो जाएगा। साथ ही जम्मू-कश्मीर आने वाले पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होगा यह अनोखा चिनाब ब्रिज। *

पास में है अनोखा अंजी ब्रिज

6 जून 2025 को ही चिनाब पुल का उद्घाटन करने के बाद प्रधानमंत्री ने इसी रेल ट्रैक पर बने अंजी ब्रिज का भी लोकार्पण किया। यह देश का पहला ऐसा रेलवे ब्रिज है, जो केबल स्टेंड तकनीक पर बना है। रिपोर्ट्स के अनुसार यह पुल नदी तल से 331 मीटर की ऊंचाई पर बना है। 1086 फीट ऊंचा एक टावर इसे सहारा देने के लिए बनाया गया है, जो करीब 77 मंजिला बिल्डिंग जितना ऊंचा है। यह ब्रिज अंजी नदी पर बना है, जो रियासी जिले के कटरा को बनिहाल से जोड़ता है। चिनाब ब्रिज से इसकी दूरी महज 7 किमी है। इस पुल की लंबाई 725.5 मीटर है। इसमें से 472.25 मीटर का हिस्सा केबल्स पर टिका हुआ है।

शारीरिक-आर्थिक सेहत सुधारे सेब

{ उपयोगी पेड़ / वीना गौतम }

भारत में सेब अभिजात्य फलों में से एक माना जाता है। डॉक्टर भी हर किसी को, रोगों से बचने के लिए रोज एक सेब खाने की सलाह देते हैं। सेब के स्वास्थ्य संबंधी फायदों की वजह से इसकी मांग हमेशा, हर मौसम में बनी रहती है। यही कारण है कि सेब प्रायः महंगा ही बिकता है। जाहिर है, सेब की खेती आर्थिक दृष्टि से किसानों के लिए भी बहुत फायदेमंद होती है।

कहां होती है सेब की खेती: भारत में सेब के पेड़ मुख्यतः पर्वतीय और ठंडी जलवायु वाले इलाकों में उगते हैं। लेकिन जलवायु परिवर्तन और कृषि क्षेत्र में हुए तमाम तकनीकी उन्नति के कारण अब सेब मैदानी राज्यों में भी किसानों द्वारा उगाया जा रहा है। देश में पारंपरिक रूप से सेब का उत्पादन हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड और सिक्किम जैसे राज्यों के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सदियों से होता रहा है। लेकिन अब हिमालय से सटे मैदानी राज्यों जैसे- पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में भी सेब की कुछ प्रजातियां उगाई जा रही हैं।

सेहत के लिए गुणकारी: सेब में कई तरह के विटामिंस, मिनरल्स, एंटीऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। यह अनेक रोगों से बचाता है और शरीर को पोषण देता है। कहावत भी है कि रोज एक सेब खाइए, रोगों से दूर रहिए।

किसानों के लिए फायदेमंद: सेब एक नकदी फसल है। यह किसान के लिए ही आर्थिक सहायता नहीं पहुंचाता, बल्कि आम कृषि मजदूरों के लिए भी रोजगार के अवसर पैदा करता है। सेब की बागवानी में पौधा रोपण से लेकर उसकी कटाई, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकिंग और परिवहन तक में कई लोगों को रोजगार मिलता है।

अनुमानित आमदनी: सेब का बगीचा 5 से 7 साल में फल देना शुरू कर देता है। सेब के एक पेड़ से किसान को हर साल 100 से 200 किलो फल मिल जाते हैं। औसतन एक हेक्टेयर सेब का बगीचा हर साल लगभग 15 टन उपज देता है, जिससे किसान को सारे खर्च निकालकर 10 से 15 लाख रुपए तक का फायदा हो सकता है। लेकिन इसके लिए पहले किसान को हर साल सेब के बागीचे में 4 से 5 लाख रुपए खर्च करने पड़ते हैं। बाजार चाहे कितना भी डाउन हो, सेब की खेती किसानों को फायदा ही पहुंचाती है। *

बुरे सपनों को दूर रखे लकी चार्म ड्रीम कैचर

{ रोचक / शिखर चंद जैन }

आपने गिफ्ट शॉप, ऑनलाइन शॉपिंग साइट्स या छोटे बच्चों के पालने पर लगे ड्रीम कैचर्स जरूर देखे होंगे। यह एक छोटा सा वृत्ताकार फ्रेम (हूप) होता है, जिसमें मकड़ी के जाल की तरह धागों से बुनी हुई आकृति होती है, कुछ मोती होते हैं और पंख (फेदर्स) लटके हुए होते हैं। यह सिर्फ सजावट की वस्तु नहीं है, इसे वास्तुशास्त्र में भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

कैसे हुई शुरुआत: ड्रीम कैचर का आविष्कार करने का श्रेय अमेरिकी जनजाति ओजिब्वे (चिप्पेवा) के लोगों को जाता है। इस जनजाति के लोग कनाडा और नॉर्थ अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में रहते हैं। ओजिब्वे जनजाति के लोगों की मान्यता थी कि उनके सभी बच्चों और बड़ों की सुरक्षा असिबाइकाशी नामक एक रहस्यमयी स्पाइडर वूमेन करती है। जब इस जनजाति के लोगों की आबादी बढ़ने लगी और वे दूर-दूर तक जाकर रहने लगे, तो असिबाइकाशी ने स्पाइडर वेब के साथ एक जादुई यंत्र/ताबीज तैयार किया और अपने-अपने परिवार के सदस्यों की सुरक्षा के लिए ओजिब्वे समुदाय की महिलाओं को भी यह यंत्र बनाना सिखाया। उस यंत्र को ही आज वास्तु और फेंगशुई की दुनिया में 'ड्रीम कैचर' के नाम से जाना जाता है।

तेजी से हुआ पॉपुलर: ओजिब्वे जनजाति के लड़के और लड़कियों के विवाह में अन्य वस्तुओं के साथ ड्रीम कैचर्स का भी आदान-प्रदान किया जाने लगा। नतीजतन ड्रीम कैचर का प्रचलन दूसरी जनजातियों, जैसे लकोटा जनजाति आदि में भी बढ़ने लगा। धीरे-धीरे ड्रीम कैचर विभिन्न अमेरिकी जातियों/समुदायों के साथ-साथ अन्य सभ्यताओं-संस्कृतियों में भी लोकप्रिय होने लगा।

ड्रीम कैचर के पार्ट्स: ड्रीम कैचर में मुख्य रूप से एक वृत्त, धागों से बुना जाल, बीड और फीदर्स होते हैं। हर तत्व का अपना महत्व और प्रतीक है।

जीवन चक्र का प्रतीक वृत्त (हूप): यह हमारे जीवन चक्र का प्रतीक माना जाता है। यह भी मान्यता है कि यह वृत्त सूर्य और चंद्र का प्रतिनिधित्व करता है।

बुरे सपनों को ट्रैप करता जाल (वेब): जैसे मकड़ी अपने जाल में शिकार फंसा लेती है, वैसे ही ड्रीमकैचर का वेब बुरे सपनों को जाल में फंसा लेता है। बीचों-बीच जो छेद होता है, वह अच्छे सपनों के प्रवेश द्वार की तरह काम करता है।

सपनों की सीढ़ी पंख (फेदर): ड्रीम कैचर में लगे पंख को अच्छे सपनों का वाहक या अच्छे सपनों की सीढ़ी माना जाता है। आजकल पक्षियों के पंख के स्थान पर जेमस्टोन भी लगाए जाते हैं।

मकड़ी और बुरे सपने हैं बीड: ड्रीम कैचर के बीच मे लगा सिंगल बीड मकड़ी का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि इसके इर्द-गिर्द लगे मल्टीपल बीड्स पकड़े गए बुरे सपनों के प्रतीक होते हैं।

लकी चार्म बना ड्रीम कैचर: आज दुनिया के कई देशों में ड्रीम कैचर को माइंडफुलनेस, सुरक्षा और सकारात्मकता के प्रतीक के रूप में सजाया जाता है। लोगों के लिए एक लकी चार्म है ड्रीम कैचर। *

बारिश के मौसम में रिमझिम फुहारों से हर किसी का मन खिल उठता है। इस सुहाने मौसम में काले-काले बादलों से झरती बारिश की बूंदों से भीगी कई यादगार हिंदी फिल्में और कर्णप्रिय गीत कभी भुलाए नहीं जा सकते। ऐसी ही कुछ फिल्मों और सदाबहार गानों पर एक नजर।

फिल्मों-गीतों को खूब भिगोया बारिश की रिमझिम फुहारों ने

{ सिने जगत / चेतना झा }

अपने शुरुआती दौर से ही हिंदी सिनेमा ने बरसात के मौसम की खूबसूरती को पर्दे पर तरह-तरह से पेश किया है। कई फिल्मों के नाम और उनकी कहानी के प्लॉट में बरसात शामिल रही है तो अनेक फिल्मों में बारिश से जुड़े गीतों ने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। उम्मीदों को बरसती बूंदों के जरिए कभी पर्दे पर दिखाया गया है तो विरह के गीत के लिए भी सावन-भादो का सहारा लिया गया है। खासतौर पर प्रेमी जोड़ों को भिगोने वाले रोमांस के लिए बरसात का मौसम बॉलीवुड में सबसे मुफीद माना जाता रहा है।

पर्दे के बाहर मचलता मन: कभी मशीनी बारिश में शिफॉन की साड़ी पहन कर अपने नृत्य से नायिका के गीत चर्चित हुए तो कभी वास्तविक बारिश में मुंबई की सड़कों पर 'रिमझिम गिरे सावन' जैसे यादगार गीत फिल्माए गए। आज सोशल मीडिया के दौर में बहुत से यंगस्टर्स ऐसे गीतों को रिक्रिएट कर रील्स बनाने के लिए खूब उतावले दिखते हैं। यही तो जादू है बॉलीवुड फिल्मों की बारिश का। नायक-नायिकाओं की प्यार भरी तकरार, इंकार और फिर इजहार की अनगिनत दास्तानें टिप-टिप बारिश के बीच इतने दिलकश अंदाज में फिल्माई जाती रही हैं कि रियल लाइफ में भी कुछ लोग इन्हें खुद अनुभव करने के लिए मचल उठते हैं।

'आज रपट जाएं' गाने के एक दृश्य में अमिताभ और स्मिता पाटिल

गीतों में उम्मीद-मिलन-विरह: 'पुरवा के झोंकवा से आयो रे संदेसवा कि चल आज देसवा की ओर' हो या 'घनन-घनन घिर आए बदरा...' फिल्मों में भी मानसूनी बादल, उम्मीद-उत्साह का संचार भरपूर करते हैं। 'तुम्हें गीतों में ढालूंगा, सावन को आने दो...' 'मौसम है आशिकाना, ऐ दिल कहीं से उनको ऐसे में ढूंढ लाना...' मिलन और उम्मीद की बूंदों से भीगे ऐसे बेशुमार गाने सिनेप्रेमियों के पसंदीदा गीतों में शामिल हैं। फिल्मों में बारिश का सावन का महीना, न केवल मिलन के गीत गाता है, बल्कि विरह की तान भी छेड़ता है। याद आता है, मोहम्मद रफी का वह गीत, 'अजहू न आए बालमा, सावन बीता जाए।'

बरसात पर केंद्रित फिल्में: कई फिल्में तो बरसात को केंद्र में रखकर ही फिल्माई गईं। कई फिल्मों के नाम ही बरसात और बरसात के प्रमुख महीने सावन से जुड़े हुए हैं। शुरुआत 1945 में आई मोतीलाल और शांता आप्टे की फिल्म 'सावन' से हुई। 1949 में आई राजकपूर की फिल्म 'बरसात' ने तो तय कर दिया कि बरसात फिल्मों की सफलता का अचूक मंत्र है। बाद में बरसात नाम की दो फिल्में और बनीं। इन दोनों के नायक बॉबी देओल थे। 1960 में भारत भूषण और मधुबाला की 'बरसात की रात' आई। 1981 में अमिताभ बच्चन और राखी की हिट जोड़ी से सजी 'बरसात की एक रात' रिलीज हुई। 'बरखा बहार' फिल्म में भी बारिश का रोमांटिक अंदाज नजर आया था। 'मानसून वेडिंग' नाम से भी एक फिल्म काफी चर्चित हुई थी। 'तुम मिले', 'लगान', 'आया सावन झूम के', 'प्यासा सावन', 'सावन की घटा', 'सोलहवां सावन', 'सावन के गीत', 'प्यार का पहला सावन', 'सावन का महीना', 'सावन को आने दो', 'सावन-भादो', इस श्रंखला में कई फिल्में शामिल हैं।

ये गीत भी हैं यादगार: 'प्यार हुआ इकरार हुआ ...' राजकपूर और नरगिस का बारिश के दौरान एक छतरी के नीचे चलते हुए यह गीत गाना, उस जमाने के रोमांस की शायद पराकाष्ठा ही थी। फिल्म 'श्री 420' का यह गाना आज भी मन को प्यार की भावना से भिगो देता है। बरसात, प्रेमियों के लिए कितनी कीमती होती है, यह सरेआम बयां किया फिल्म 'रोटी कपड़ा और मकान' के एक गीत में जीनत अमान ने। जब वो दो टकिए की नौकरी के पीछे लाखों का सावन कुर्बान होने की शिकायत करती हैं। यह जीनत के इस गाने से जाहिर होता है कि 'हाय-हाय ये मजबूरी, ये मौसम और ये दूरी' आज भी कई लोगों को नून-तेल-हल्दी के फेर में गुम हो रहे रोमांस की याद दिला जाता है। इसी तरह मधुबाला और भारत भूषण पर फिल्माया गाना 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात' को भी नहीं भुलाया जा सकता है। इसी तरह 'चांदनी' फिल्म का गाना 'लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है', आज भी दिल को तरंगित कर जाता है।

माना गया हिट फॉर्मूला: दर्शकों द्वारा बारिश पर फिल्माए गीतों को पसंद किए जाने की वजह से कई फिल्मों में तो हिट फार्मूले की तरह बारिश के गाने को फिल्मों में जबर्दस्ती शामिल किया गया। याद कीजिए अमिताभ बच्चन और स्मिता पाटिल पर फिल्माया गया 'नमक हलाल' फिल्म का गाना, 'आज रपट जाएं तो हमें न उठइयो..', जो सुपरहिट रहा था। इसी तरह फिल्म 'गुरु' में 'बरसो रे मेघा...' गाने पर ऐश्वर्या राय ने बेहद दिलकश नृत्य किया था। बरसात के सीन पर फिल्माए ऐसे फेमस गीतों में 'दिल तो पागल है' का गाना 'कोई लड़की है, जब वो हंसती है, बारिश होती है...' फिल्म 'मोहरा' का गाना 'टिप-टिप बरसा पानी', 'फना' का गाना 'ये साजिश है बूंदों की' भी शामिल हैं। इसी कड़ी में याद आता है '1942 ए लव स्टोरी' का गाना 'रिम-झिम रिम-झिम, रुम-झुम रुम-झुम...' कहने का सार है कि बारिश की फुहारों ने हिंदी फिल्मों और गानों को खूब भिगोया है। *